ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - १४ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जुलाई (द्वितीय) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

उच्च प्रथम श्रेणी प्राप्त शिविरार्थीगण

प्रथम श्रेणी प्राप्त शिविरार्थीगण

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ अंक : १४
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: श्रावण कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जुलाई द्वितीय २०१४

अनुक्रम

१. सेवा के नाम पर देशद्रोह	सम्पादकीय	०४
२. अभ्यास - कैसा हो?	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१२
४. दु:ख का मूल: मिथ्याज्ञान	मुमुक्षु मुनि	२०
५. जीव की कर्म स्वतन्त्रता और ईश्वर...	सत्येन्द्र सिंह आर्य	२१
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२४
७. इन्द्र व उसका सोमपान	महात्मा चैतन्यमुनि	२६
८. ज्योतिष्टोम अग्निष्टोमाख्यस्य.....	सनत्कुमार:	२९
९. जिज्ञासा समाधान-६७	आचार्य सोमदेव	३५
१०. संस्था-समाचार		३७
११. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

सेवा के नाम पर देशद्रोह

संसार में सेवा कार्य सदा से प्रशंसनीय रहा है। सेवा का केन्द्र मुख्य रूप से मनुष्य तथा समस्त प्राणी समुदाय को लेकर चुना जाता है। सेवा कार्य करने वाले दूसरे लोगों से इस कार्य में सहयोग लेते हैं तथा लोगों को इसमें सहयोग देकर प्रसन्नता होती है। लोग संगठन बनाकर भी समाज सेवा का कार्य करते हैं। सरकार बड़े-बड़े कार्य करती है परन्तु सभी कार्य परोपकार और समाज सेवा के लिए सरकार द्वारा किया जाना सम्भव नहीं है। समाज में सम्पन्न व्यक्ति, उद्योगपति, बड़े व्यवसायी, व्यापारी लोग तथा सरकारें इन समाज उपयोगी कार्यों के लिए बड़ी राशि अनुदान के रूप में देते हैं। आजकल की भाषा में ऐसे संगठन एवं संस्थाओं को गैर सरकारी सेवा संगठन-एन.जी.ओ. कहा जाता है।

मनुष्य को जब कुछ बुरा करना होता है तो वह घोषणापूर्वक बुरा नहीं कर सकता। परोपकार तो घोषणापूर्वक कर सकता है परन्तु स्वार्थ घोषणापूर्वक नहीं कर सकता। अत: परोपकार की घोषणा करके उसमें स्वार्थ सिद्ध करने का रास्ता खोजता है। यही आजकल के स्वयंसेवी संगठन कर रहे हैं। वर्तमान में स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका पर आज के समाचार पत्र तथा इण्टरनेट जो चर्चा कर रहे हैं, वह भारत के सम्बन्ध में यहाँ के संगठनों द्वारा किये जाने वाले कार्यों को लेकर है। इससे पहले भी अनेक देशों में इन संगठनों के क्रिया-कलापों पर उंगली उठ चुकी है। इसके विषय में अनेक पुस्तकें और लेख लिखे जा चुके हैं। यहाँ एक रहस्य हमें समझना चाहिए कि स्वयंसेवी संगठनों को जो भारी धन राशि सहयोग के रूप में दी जाती है, वह उदारता अथवा परोपकार की भावना से नहीं दी जाती, इसके पीछे एक सोची-समझी रणनीति काम करती है। जब स्थापित उद्योग, संगठन, व्यापार, व सरकारों के जन विरोधी कार्यों से समाज में आक्रोश उत्पन्न होता है, तब विशेष रूप से समाज का युवा वर्ग ऐसी सरकारों और संगठन के विरुद्ध आन्दोलन के लिए आगे बढ़ता है। युवा लोग कष्ट सहने, बलिदान करने में हिचकते नहीं हैं, अत: सरकारों, उद्योगपतियों आदि को इनसे ही सबसे अधिक भय लगता है। सरकार, उद्योगपति एवं संगठनों ने बहुत सोच-विचार कर इन स्वयंसेवी संगठनों को अपनी ओर किया। जो युवा दु:ख और कष्ट में आन्दोलनों में संघर्षरत रहते हैं उन्हें परोपकार और समाज-सेवा के नाम पर सुविधा से जोड़ दिया जाता है। मनोवैज्ञानिक रूप से उन्हें ऐसा लगता है या ऐसा अनुभव कराने का प्रयास किया जाता है कि वे समाज के बड़े उपकार के काम में लगे हैं। परन्तु बाद में यह भ्रम टूट भी जाये तो तब तक ऐसे युवा इन अनुदानप्राप्त स्वयंसेवी संगठनों के सुविधा जाल में गहरे फंस जाते हैं और इन सरकारों, उद्योगपतियों व कम्पनियों के इशारों पर नाचने के लिए बाध्य हो जाते हैं। इसका उदाहरण आज समाचार पत्रों में इन स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यों को देख कर समझा जा सकता है। स्वयंसेवी संगठनों के गलत कार्यों का दण्ड तो नरेन्द्र मोदी से अधिक सम्भवत: किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं भोगा होगा। सारे के सारे स्वयंसेवी संगठन मोदी के पीछे पड़े रहे और आज भी पड़े हैं। यह कार्य वे केवल उन सुविधा और पैसों के लिए कर रहे हैं जो इन्हें हवाई यात्राओं, पांचसितारा होटलों में रहना, वातानुकूलित गाड़ियों व कार्यालयों के रूप में मिलती हैं। एक बार मनुष्य जब सुविधाओं से जुड़ जाता है फिर उनसे छूटना सम्भव नहीं होता। मनुष्य इन सुविधाओं के लिए केवल व्यक्ति का विरोध नहीं करता वह अपने देश, भाषा, संस्कृति को भी नष्ट करने के लिए तत्पर हो जाता है जैसा आज ये स्वयंसेवी संगठन के नाम पर अपने को देश और समाज का नेता बता रहे हैं।

पिछले दिनों इन संगठनों के क्रियाकलाप चर्चा का विषय बने हैं। इनके कार्यों की जानकारी सरकारों व प्रमुख लोगों को थी। परन्तु भारतीय गुप्तचर संस्था, आईबी-इन्टेलीजेन्स ब्यूरो की रिपोर्ट जो सरकार में पड़ी थी वह संचार व समाचार माध्यमों के कारण समाज में आई और चर्चा भी हुई। इस सूचना के चर्चा में आने से इन संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में खलबली मची हुई है। उनमें से कुछ लोगों ने आपत्ति जताई है कि यह गुप्त सूचना समाचार तन्त्र तक कैसे पहुँची। प्रश्न पहुँचने के प्रकार से अधिक इन संस्थाओं के कार्य और करने वालों की निष्ठा ही सन्देह के घेरे में आ गई है। जो कार्य इन नेताओं द्वारा किये गये हैं और किये जा रहे हैं, उनके प्रमाण इस रिपोर्ट में दिये गये हैं, उनमें एक नाम स्वामी अग्निवेश का भी है, वैसे तो उनके क्रियाकलाप अब छिपे नहीं रहे परन्तु इस रिपोर्ट में उनके योगदान को जानना उपयोगी रहेगा। इस रिपोर्ट में

कहा गया है- स्वामी अग्निवेश अपने को भगवा समाजवादी कहलाते हैं, उन्हें स्विट्जरलैण्ड में एक कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता के रूप में बुलाया गया था। इस कार्यक्रम का विचारणीय बिन्दु था- जो उद्योग निर्माण और खनन के कार्यों में लगे हैं उनमें मानव अधिकारों का उल्लंघन किस प्रकार किया जा रहा है? स्वामी अग्निवेश को इस कार्यक्रम में बुलाने वाली संस्था नीदरलैण्ड द्वारा आर्थिक सहयोग प्राप्त संस्था सी.ओ.आर.डी.आई.डी. है। इस सम्मेलन के बाद भारत में जिन कार्यों को मानव अधिकार संरक्षण के नाम पर रोकने का प्रयास किया जा रहा है उनमें है मणिपुर में जुबिलैण्ट एनर्जी नामक कम्पनी जो पेट्रोल निकालने का काम कर रही है, दूसरे विरोध का स्थान अरुणाचल में बन रहे बान्ध का निर्माण रुकवाना, तीसरा मेघालय में खनिज निकालने के कार्य को मानव अधिकार के नाम पर रुकवाना प्रारम्भ किया। यह कार्य जिनेवा सम्मेलन का परिणाम रहा। भारत में जितने विकास के कार्य हैं उन्हें मानव अधिकार, पर्यावरण आदि के नाम पर रुकवाना, उनमें देरी करवाना इन संगठनों का उद्देश्य है। सरकार को दी गई रिपोर्ट में इन संगठनों द्वारा जिन-जिन उद्योगों, योजनाओं को रुकवाने का प्रयास किया गया उनका नाम लिया गया है। इनके विरोध से स्थानीय लोगों द्वारा भी उन योजनाओं का विरोध किया जाता है। जैसे ये संस्थायें पर्यावरण के नाम पर पूर्वोत्तर में सड़क बनाने, तेल निकालने और खनन उद्योग का विरोध करती हैं। मणिपुर क्षेत्र में सड़क बनने से तेल और खनन उद्योग में स्वाभाविक रूप से गति आती है। परन्तु मणिपुर के तेल क्षेत्र पर अमेरिका की नजर है, वह चाहता है इस क्षेत्र को भारत से पृथक् कर दिया जाय और तेल की सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया जाय, इसके लिए अमेरिका ने चर्च को भी अपने हथियार के रूप में काम में लिया है और चर्च द्वारा समय-समय पर भारत विरोध की आवाज उठाई जाती है और अलग राज्य की माँग की जाती है। तेल से भी अधिक मूल्यवान खनिज भण्डार थोरियम का है जिसके बारे में विशेषज्ञों का मानना है कि यह नब्बे हजार टन से भी बड़ा भण्डार है, जिसके चलते भारत परमाणु ऊर्जा में एक सम्पन्न देश बनने का सामर्थ्य रखता है परन्तु स्वयंसेवी संगठनों के माध्यम से पर्यावरण और मानव अधिकार की दुहाई देकर उसके खनन को रोका जा रहा है।

इसी प्रकार बिजली बनाने के लिए कोयले की आवश्यकता है, ये संगठन कोयला खनन का विरोध करके उसे रुकवाने का प्रयास करते हैं, जिससे बिजली उत्पादन में यह देश पिछड़ जाये और विदेशी कम्पनियों का व्यापार अधिक से अधिक फले-फूले। इसी प्रकार बान्ध का विरोध कर सिंचाई व बिजली के उद्योगों को रोका जाता है, इसका उदाहरण मेधा पाटेकर है जो सरदार सरोवर की ऊँचाई बढ़ाने को लेकर आन्दोलन चला रही है। उनका संगठन भी विदेशी धन पर ही फल-फूल रहा है, उन्होंने पिछले दिनों लोकसभा का चुनाव भी लड़ा था परन्तु जनता ने उन्हें सफलता नहीं दी। ये लोग इन विदेशी पैसों के बल पर स्थानीय लोगों को इकट्ठा करके उद्योगों के विरोध में आन्दोलन करते हैं और अन्तर्राष्ट्रीय संचार माध्यमों में वाहवाही लूटते हैं। इन उद्योगों को रुकवाने, देर करने के लिए ये संगठन जहाँ जनता को आन्दोलन के लिए भड़काते हैं वहीं पर उन कार्यक्रमों के विरुद्ध न्यायालय में मुकद्दमें लड़कर इनको बनने में देरी करवाते हैं और इन योजनाओं को समाप्त कराने का प्रयास करते हैं। खुफिया तन्त्र की इस रिपोर्ट में बहुत सारे तथ्य दिये गये हैं, उनमें गुजरात सरकार के कार्यों को गलत सिद्ध करने के लिए उसमें कमियाँ खोजने का काम अनेक स्वयंसेवी संगठनों ने सम्भाल लिया है इसका भी जिक्र है।

इन सब घटनाओं में बड़ी बात है कि ये संगठन देश के विकास की गति को धीमा करने और रोकने का प्रयास तो कर ही रहे हैं इससे भी अधिक दु:ख और आश्चर्य की बात है कि ये लोग देश के शत्रुओं का समर्थन करते हैं और उनको सहायता पहुँचाने का घृणित कार्य भी करते हैं। छत्तीसगढ़ में माओवादियों का साथ देने के अपराध में गिरफ्तार किये गए डॉ. सेन को छुड़वाने के लिए इन मानव अधिकारवादियों ने एड़ी से चोटी का जोर लगाया था। उस वाद की सुनवाई में विदेश से मानव अधिकारवादी न्यायालय में न्याय प्रक्रिया का निरीक्षण करने के लिए आये थे। स्वामी अग्निवेश को माओवादियों के साथ 'भारतीय सेना वापिस जाओ' के नारे लगाते हुए पाठकों ने रजत शर्मा के कार्यक्रम आप की अदालत में देखा ही था। यह सब कुछ ये लोग मानव अधिकार के नाम पर करते हैं। अरविन्द केजरीवाल, प्रशान्त भूषण, पूर्व एडमिरल रामदास, योगेन्द्र यादव, मेधा पाटेकर आदि सामाजिक कार्यकर्त्ता विदेशी सरकार और कम्पनियों के लिये दलाली करते हुए देखे गये हैं।

आई.बी. की इस रिपोर्ट के सामने आने पर भारत सरकार ने अपनी कार्यवाही अब प्रारम्भ कर दी है, यह

प्रसन्नता की बात है। सरकार ने ग्रीनपीस इन्टरनेशनल तथा क्लाइमेट्स वर्क्स फाउन्डेशन को किसी भी तरह का अंशदान पूर्वानुमति के बिना लेने पर रोक लगा दी है। ये दोनों संगठन अब एमनेस्टी इण्टरनेशनल तथा ह्यूमन राइट्स वॉच से जुड़ गये हैं। इनकी गतिविधियाँ भी इसी घेरे में आती हैं, उनको भी सरकार ने नोटिस दिया है। इन संगठनों ने एक और शस्त्र अपने कार्य के लिए अपनाया है, वह है सूचना का अधिकार। इसके अन्तर्गत सूचनायें प्राप्त कर उसके आधार पर भारतीय उद्योगों के विरुद्ध मुकद्में दायर करना, इनका मुख्य कार्य रहा है। इसलिए सूचना के अधिकार का देश के विकास को रोकने के लिए इन संगठनों ने भरपूर उपयोग किया है। इन संगठनों की पूरी छानबीन होकर इन पर वैधानिक कार्यवाही करने की आवश्यकता है।

ऐसे लोगों के लिये कहा गया है कि

अर्थार्थी जीवलोकोऽयं श्मशानमपि सेवते।

धन के लिये व्यक्ति शमशान की भी पूजा करता है।

-धर्मवीरः

एकाएक!

सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'

यह प्रकृति की और प्रभु की विमल व्यवस्था-नेक।
अचानक! ही हो जाता है मन में, एकाएक बोध अनेक।।
'यूरेका-यूरेका'! कह कर चिल्लाये-या ना वैज्ञानिक,
ऋषि मुनियों ने चिन्तन के क्षण में ही पाया था सारा तकनीक
ईश उपासना सम्बल टेक।।
प्रभु की विमल व्यवस्था नेक।।
यथा पिण्डे-तथा ब्रह्माण्डे सूक्ष्म और विस्तारण,
तथ्य एक! सम्बन्ध देख ले, इस प्रकृति के कारण।
हो पाता जिसका अभिषेक।।
प्रभु की विमल व्यवस्था नेक।।
एकाएक प्रभु से जुड़ती, जब मानव की ऊहा,
मिल जाता निर्देश सार्थक, कुन-फय-कुन समीक्षा।
हो जाता इतिहास में देख।।
प्रभु की विमल व्यवस्था नेक।।
देश-विदेश, गोरे-काले का, भेद ना होते देखा
उसको ही मिल जाती दौलत, समयानुकुल जो होता।
जिसके माथे पर ना होती, किसी चिन्ता की रेख।।
प्रभु की विमल व्यवस्था नेक।।
कोहेतूर-फितूर-बुराक, संसाधन बन जाते मानव के,
आविष्कार-आवश्यकता पर जनती, यन्त्र-तन्त्र सुखकर जो सके
एकान्त पाकर ही होता, है समाधि उल्लेख।।
प्रभु की विमल व्यवस्था नेक।।

- आर्य समाज मन्दिर, नेमदार गंज
नवादा-बिहार

ते हि नो दिवसा गताः

- डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री

पितरौ प्रातरुत्थाय प्रणमन्ति स्म ये सुताः।
साम्प्रतं न तथा किञ्चित्-ते हि नो दिवसा गताः।।
सप्तवादन-पर्यन्तं पर्यङ्के निद्रिता यदा।
व्यायामश्च कदा योगः? ते हि नो दिवसा गताः।।
चायपानं यदा प्रातः धूमपानं मुहुस्तथा।
उषःपानं कदा कार्यम्? ते हि नो दिवसा गताः।।
अतीव व्याततां गेहे कीर्त्तयन्ति जना यदा।
कदा सन्ध्याऽग्निहोमं स्यात्? ते हि नो दिवसा गताः।।
विलोक्य त्वतिथिं दूरान् मुखे नाऽस्ति प्रसन्नता।
वदेत् कञ्चाऽतिथिं देवम्? ते हि नो दिवसा गताः।।
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् इत्येव वचनं मुदा।
मन्यन्ते साम्प्रतं के वै? ते हि नो दिवसा गताः।।
ब्राह्मणेन षडङ्गोऽयम् अध्येयो ज्ञेय एव च।
वेदः सर्वस्य यो मूलम्- ते हि नो दिवसा गताः।।
नाऽपभाषितवै लोके न च म्लेच्छितवै तथा।
क्व वैयाकरणा दृष्टाः- ते हि नो दिवसा गताः।।
गुरोर्निलीयते शिष्यो नेदं युक्तम् उदाहृतम्।
गुरुरेव निलीनः स्यात्-ते हि नो दिवसा गताः।।
विद्यालयाऽतिरिक्त चाऽध्यापयन् ये पुरा गृहे।
विद्यालयेऽद्य निद्राति-ते हि नो दिवसा गताः।।
चिटिकाऽपि परीक्षायां पूर्वमासीत् सुदुर्भभा।
परितः पुस्तकान्यद्य- ते हि नो दिवसा गताः।।
पूर्वम् एकेन रूप्येण किलोपर्यन्तम् आनुकम्।
विंशति-रूप्यैरद्य- ते हि नो दिवसा गताः।।
निर्वाचने निर्धनोऽपि पुरा स्याद्विजयी परम्।
साम्प्रतं वित्रयः स्वप्नः- ते हि नो दिवसा गताः।।

- रायबरेली

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

अभ्यास - कैसा हो?

- स्वामी विष्वङ्

मनुष्य ने भौतिक दृष्टि से अपने ज्ञान-विज्ञान को इतना अधिक विकसित किया है जिसकी कल्पना करना असम्भव सा प्रतीत होता है। संसार में असंख्य प्रतीत होने वाले अलग-अलग विषयों में प्रवेश करके मनुष्यों ने विशेष योग्यताओं को प्राप्त किया है। कोई ऐसा क्षेत्र प्रतीत नहीं हो रहा है, जिसमें मनुष्य प्रवेश नहीं कर रहा हो। किसी प्रसिद्ध क्षेत्र में कोई अपना भविष्य बनाने के लिए प्रवेश करता है और अपना उज्ज्वल भविष्य बना भी लेता है, तो वह संसार के लिए आदर्श बन जाता है। उदाहरण के लिए क्रीड़ा क्षेत्र को लीजिये, इस क्षेत्र में भी सभी क्रीडाओं में सबकी रुचि नहीं होती है। परन्तु किसी-किसी क्रीड़ा विशेष में लोगों का रुझान अधिक दिखाई देता है। जैसे फुटबॉल, क्रिकेट या टेनिस- इन क्रीड़ाओं में कोई व्यक्ति ऊँची बुलन्दियों को छू लेता है, तो वह सैंकड़ों, हजारों, लाखों नहीं करोड़ों लोगों का आदर्श बन जाता है। करोड़ों लोग उनसे प्रेरणा लेकर वे भी उनकी तरह बनने की चेष्टा करते हैं, परन्तु सब नहीं बन पाते हैं पर आधे या एक चौथाई भी नहीं बन पाते। हाँ, कोई-कोई विरला ही बन पाता है। लाखों-करोड़ों लोग प्रेरणा लेकर पुरुषार्थ करते हैं, वे क्यों सफल नहीं होते हैं? सफल होने की चाह होने मात्र से कोई सफल नहीं होता है, फिर कैसे सफल होगा? सफलता के कारणों को अपनाने से सफलता मिल सकती है।

सफलता के वे कौन से कारण हैं, जिनको अपनाने पर मनुष्य सफल होता है? यद्यपि सफलता के बहुत से कारण हैं, परन्तु एक महत्त्वपूर्ण कारण '**अभ्यास**' है। जो व्यक्ति जिस क्षेत्र में सफल होना चाहता है, उस क्षेत्र में विशेष अभ्यास करता जाये। विशेष अभ्यास से सफलता मिलेगी, परन्तु सफलता अवश्य मिलेगी इसका आश्वासन दे सकते हैं या नहीं? हाँ, विशेष अभ्यास को विशेष रूप से करने पर अवश्य ही सफलता मिलेगी। यदि मनुष्य अपने प्रयत्न गुण को यथार्थ रूप से समझ लेता है, तो वह प्रयत्न को सफल बना सकता है अर्थात् प्रयत्न गुण आत्मा का स्वाभाविक गुण है और वह स्वभाव सभी आत्माओं में विद्यमान है- एक जैसा है। यदि कोई मनुष्य अपने प्रयत्न को जानकर उसका प्रयोग उचित रूप में करके सफल हुआ है, तो सभी मनुष्य सफल हो सकते हैं। क्योंकि प्रयत्न सब में एक समान है। प्रयत्न का उचित प्रयोग क्या हो सकता है? और क्या प्रयत्न का अनुचित प्रयोग भी हो सकता है? हाँ, प्रयत्न का प्रयोग उचित और अनुचित दोनों प्रकार से होता है। उचित प्रयोजन की सिद्धि के लिए मनुष्य यत्न करता है, तो वह उचित प्रयत्न कहलाता है। जैसे मोक्ष, समाधि, वैराग्य की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला प्रयत्न। मनुष्य अनुचित प्रयोजन की सिद्धि के लिए यत्न करता है, तो वह अनुचित प्रयत्न कहलाता है। जैसे, चोरी, डाका, मिलावट करना आदि अनेक अनुचित प्रयोजन होते हैं। यदि मनुष्य उचित प्रयत्न को उचित प्रयोजन के लिए उचित रीति से करता है, तो वह अवश्य सफल होता है, इसमें विकल्प नहीं है।

वेद भी कहता है '**ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृतं स्मर।**' (यजु. ४०.१५) अर्थात् परमेश्वर वेद के माध्यम से आत्मा को उपदेश करते हैं कि हे आत्मन्! तू क्रतु है- कर्मशील है-प्रयत्न वाला है-तुम्हारा स्वभाव ही प्रयत्न करना है। इसलिए तुम अपने प्रयत्न गुण (विशेषता) को जानो और पहचानो। तुम वह पुरुषार्थ कर सकता है, जिसको ऋषि, महर्षि, मुनि, योगी, महापुरुषों ने किया है। तुम कभी भी अपने आपको सामर्थ्यहीन न समझना। तुझ में क्लिब-सामर्थ्य है, उस क्लिब रूपी सामर्थ्य को पहचान लेना, जिससे तुम्हें यह बोध होगा कि तुम में कितना सामर्थ्य है। तुम यह भी जान लो कि तूने अब तक क्या-क्या किया। तूने कितनी बार विवेक, वैराग्य को पाकर समाधि लगाई और कितनी बार मोक्ष में जा कर परमानन्द को पाया है। इसलिए तुम हताश-निराश नहीं होना। तेरा भूत काल उज्ज्वल था और भविष्य भी उज्ज्वल रहेगा। परन्तु तू अपने वर्तमान काल को पहचान। यदि तू अपने वर्तमान काल को उज्ज्वल बनाने का विचार रखता है और उसके लिए दृढ़ संकल्प लेता है, तो तू अपने प्रयत्न गुण को जानता है। अन्यथा तुम प्रयत्न गुण के होते हुए भी सफल नहीं हो पायेगा। यदि मनुष्य वेद के सन्देश को अच्छी प्रकार जान लेता है और तदनुरूप प्रयत्न का उचित प्रयोग करता है, तो निश्चित रूप से सफल हो पायेगा।

मनुष्य चाहे अपने प्रयत्न गुण को जानता हो या नहीं

जानता हो परन्तु प्रयत्न-पुरुषार्थ किये बिना नहीं रह सकता। प्रत्येक मनुष्य का कोई न कोई लक्ष्य बना रहता है और उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए मनुष्य प्रयत्न करता रहता है। इस रूप में प्रयत्न सभी करते हैं, परन्तु सफल कोई-कोई ही होता है। कोई व्यक्ति किसी विशेष क्षेत्र में सफल होता है, तो उसकी सफलता को देख कर करोड़ों लोग प्रेरणा लेते हैं। प्रेरणा को साकार बनाने के लिए वे भी प्रयत्न करते हैं, परन्तु उन लाखों, करोडों में से कोई-कोई सफल हो पाता है। जिस प्रकार लौकिक क्षेत्रों में प्रेरणा लेकर लोग प्रयत्न करते हैं। उसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में भी प्रेरणा लेते हैं, परन्तु इस आध्यात्मिक क्षेत्र में लौकिक प्रेरणा की अपेक्षा कम (न्यून) प्रेरणा ली जाती है। जितने लोग भी प्रेरणा लेते हैं उनमें भी बहुत से लोग बीच में ही छोड़ बैठते हैं और जो लोग प्रयत्न करते हुए दिखाई देते हैं। वे भी हताशा-निराशा से युक्त होकर प्रयत्न करते हुए दिखाई देते हैं। इस कारण उन को सफलता दिखाई नहीं देती है और किसी कारण कोई-कोई हताशा-निराशा से रहित होकर प्रयत्न करता हुआ भी दिखाई देता है, तो भी उसके सामने सफलता बहुत दूर दिखाई पड़ती है। अपने सम्पूर्ण जीवन को उसी सफलता के लिए न्योच्छावर कर देता है। जीवन पूर्ण होने लगा हो या जीवन-आयु पूर्ण हो गयी हो उस स्थिति में भी लक्ष्य हाथ में नहीं आ रहा होता है। तब व्यक्ति को लगता है कि अब आयु भी पूरी हो गई परन्तु लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाया।

लौकिक लक्ष्य में और आध्यात्मिक लक्ष्य में धरती और आकाश का अन्तर है। लौकिक लक्ष्य किसी भी प्रकार का हो, पर वह लक्ष्य प्रायः एक ही जन्म में पूरा कर लेता है परन्तु आध्यात्मिक लक्ष्य (ईश्वर प्राप्ति रूप लक्ष्य) एक जन्म में पूर्ण नहीं होने वाला है। इसके लिए मनुष्य को अनेकों जन्म चाहिए, जन्म-जन्मान्तरों के पुरुषार्थ से मुक्ति तक पहुँच सकते हैं। जिस व्यक्ति को यह बोध न हो कि उसे उस लक्ष्य की प्राप्ति दो जन्म में या तीन जन्म में या कितने जन्मों में होगी। ऐसी स्थिति में मनुष्य की प्रवृत्ति बहुत कम (न्यून) होगी, इसी कारण मोक्ष मार्ग में बहुत कम लोग चलते हैं। फिर भी कोई न कोई इस मार्ग को अपना कर चल ही रहा है। संसार में सभी प्रकार के बुद्धि वाले होते हैं, इसलिए सब का ज्ञान का स्तर अलग-अलग होता है। इस कारण अध्यात्म मार्ग कभी बन्द नहीं होता। लौकिक और आध्यात्मिक दोनों ही समाज में आवश्यक हैं। इससे समाज का सन्तुलन बना रहता है। जो व्यक्ति लौकिकता में रह कर, भोग कर देख चुका होता है, वह व्यक्ति आध्यात्मिक मार्ग में सरलता से चल पाता है। क्योंकि उसका आकर्षण लोक के प्रति कम हो जाता है। चाहे लोक के प्रति आकर्षण कम क्यों न हो? फिर भी वे सारे सफल नहीं हो पाते हैं। सफलता के लिए विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता है और वह विशेष प्रयत्न सफलता को दिला सके।

किसी विशेष लक्ष्य (=मुक्ति) को बनाना और बनाने की इच्छा रखना बहुत ही सरल है। लक्ष्य बना कर उस क्षेत्र में प्रवेश करना भी सरल है, परन्तु उसी लक्ष्य का अभ्यास करना विशेष महत्त्व रखता है। यद्यपि संसार में बड़े-बड़े लक्ष्य बना कर चलने वाले बहुत मात्रा में हैं और वे अभ्यास भी करते हैं, परन्तु वे सब सफल नहीं हो पाते हैं। हाँ, कोई-कोई विरला ही सफल हो पाता है। क्या कारण है अभ्यास करने पर भी वे सफल नहीं होते? उदाहरण के लिए क्रीडा क्षेत्र में कौन सा खिलाड़ी जीतना नहीं चाहता? खिलाड़ी मैदान में उतरता ही जीतने के लिए है। परन्तु सभी नहीं जीत पाते हैं, क्यों? और जो जीतते हैं, वे कैसे जीतते हैं? जिस प्रकार से क्रीडा के क्षेत्र में है उसी प्रकार सभी क्षेत्रों में हैं। जिस प्रकार लौकिक क्षेत्रों के लक्ष्य के विषय में है उसी प्रकार आध्यात्मिक लक्ष्य (=ईश्वर प्राप्ति रूप लक्ष्य) के क्षेत्र में भी समझना चाहिए। सफलता को दिलाने वाले अभ्यास को यथार्थ रूप में समझना चाहिए कि उस अभ्यास को किस विधि से किया जाये। क्योंकि अभ्यास करने वाले किसी न किसी विधि को अपनाकर अभ्यास करते हैं। परन्तु सफल नहीं हो पाते हैं। इसलिए ऐसी विधि को अपनाना होगा जिसको अपनाकर चलने से सफलता अवश्य मिल जाये। इसके लिए हमें खोजने की आवश्यकता भी नहीं है। क्योंकि ऋषि-महर्षियों ने हम सब की उन्नति के लिए उत्तम से उत्तम उपाय बतलाएँ हैं। बस हमें तो उन उपायों को मात्र अपनाने की आवश्यकता है।

ईश्वर को प्राप्त करने के लिए किस प्रकार का अभ्यास करना चाहिए, इस सम्बन्ध में महर्षि पतञ्जलि ने कहा है- **'स तु दीर्घकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितो दृढभूमिः।'** अर्थात् हे मुक्ति को प्राप्त करने वाले मनुष्य! तुम जिस अभ्यास को करने जा रहे हो वह अभ्यास दीर्घकाल तक करो अर्थात् लम्बे काल तक करो। कितने लम्बे काल तक करना है? जितना मनुष्य का जीवन काल है अर्थात् जब तक मनुष्य जीवित रहता है तब तक करना चाहिए। इतना ही नहीं मर

कर (मृत्यु को पाकर) फिर जन्म लेना, फिर अभ्यास करना। फिर मृत्यु पर्यन्त करना। फिर जन्म, फिर मृत्यु। इस प्रकार, बस करते ही जाना है। रुकना ही नहीं। इसी का नाम दीर्घकाल है, क्योंकि संसार में कोई भी क्षेत्र कितना बड़ा क्यों न हो परन्तु वह क्षेत्र मुक्ति (मोक्ष) वाले क्षेत्र के समक्ष फीका पड़ता है। इसका कारण यह है कि भौतिक क्षेत्र प्राय: एक जन्म में ही पूर्ण होते हैं। परन्तु मुक्ति वाला क्षेत्र अनेकों जन्मों में पूर्ण हो पाता है। इसलिए मुक्ति एक जन्म में न हो कर अनेक जन्मों के प्रयत्न से प्राप्त होती है। इस कारण लम्बे काल तक अभ्यास करने की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए अभ्यास प्रारम्भ करो, प्रारम्भ करके करते जाओ, मृत्यु पर्यन्त। मृत्यु के बाद जन्म लेना, फिर अभ्यास प्रारम्भ करो मृत्यु होने तक। इस प्रकार जन्म-मृत्यु फिर जन्म-मृत्यु.... इस शृंखला को तब तक रोका न जाये जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो। इसी को दीर्घकाल तक अभ्यास करना कहते हैं। महर्षि पतञ्जलि ने अभ्यास की एक विशेषता दीर्घकाल बताई है।

अभ्यास को जहाँ दीर्घकाल तक करना है वहाँ दीर्घकाल के साथ-साथ निरन्तर करना है। निरन्तर का अभिप्राय लगातार करना है अर्थात् अभ्यास को बिना अवकाश के लगातार करते ही जाना है। प्रतिदिन करते रहना है। प्राय: संसार में प्रत्येक कार्य में कभी न कभी अवकाश रखा जाता है। शनिवार, रविवार, त्यौहार, गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस, कोई-कोई अमावस्या और पूर्णिमा को और भी अतिरिक्त अवकाश के रूप में भी बहुत कुछ होता है। व्यक्ति अलग-अलग हैं क्योंकि उनका ज्ञान अलग-अलग है। इसलिए कोई कभी भोजन में, कभी निद्रा में, कभी स्नान में, कभी किसी में, कभी किसी में अवकाश रखते हैं। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं दिखता है जहाँ अवकाश न रखा जाता हो। परन्तु मुक्ति को पाने के लिए परमेश्वर की उपासना की जाती है। उस उपासना का अभ्यास निरन्तर बिना अवकाश के करते रहना चाहिए। इसमें कभी अवकाश नहीं रखना चाहिए। यदि उपासना में अवकाश रख लिया जाये, तो अभ्यास का क्रम टूट जाता है। जिससे अभ्यास निरन्तर नहीं रह पायेगा। इसी कारण महर्षि पतञ्जलि और महर्षि वेदव्यास ने लगातार बिना रुके निरन्तर अभ्यास करते रहने का विधान किया है। दीर्घकाल तक (लम्बे काल तक) करने के साथ-साथ निरन्तरता भी हो तभी अभ्यास फलदायी हो सकता है। अभ्यास लम्बे काल तक करना समझ में आता है, परन्तु निरन्तर बिना रुके (अवकाश के बिना) करना समझ में नहीं आता, क्यों? क्योंकि कोई भी कार्य हो उसमें कभी न कभी अवकाश रखने की इच्छा होती ही है। इसलिए उपासना में भी अवकाश होना ही चाहिए। नहीं तो उपासना से मनुष्य ऊब जायेगा।

यदि अवकाश की सूक्ष्मता में जाकर देखें, तो बुद्धिमान् को स्पष्ट समझ में आयेगा कि मनुष्य अवकाश किस कार्य का रखता है और क्यों रखता है? मनुष्य जिस किसी भी क्षेत्र में कार्य करता है, तो वह अपने (स्वयं के) सुख के लिए ही कार्य करता है। अलग-अलग प्रकार के कार्यों में अवकाश रखता है। परन्तु वह उस-उस कार्य से अवकाश रख कर खाली बिल्कुल नहीं रहता है। हाँ, एक कार्य में अवकाश रखकर दूसरे (भिन्न प्रकार के) कार्य में व्यस्त होता है। यदि कोई व्यक्ति कुछ भी कार्य न कर निद्रा में व्यस्त होता हो, तो वह निद्रा भी एक प्रकार का कार्य है, जिससे उस व्यक्ति को सुख मिलता है। हाँ, कोई भी बुद्धिमान् यह अवकाश लेकर दिखावें कि **'आज पूरे दिन-चौबीस घण्टों में किसी भी प्रकार का सुख नहीं लूँगा।'** इस प्रकार किसी भी प्रकार का सुख न लेने का अवकाश लेकर दिखलावें। ऐसा कभी भी सम्भव नहीं हो सकता, क्योंकि सुख मात्र का अवकाश लेना आत्मा के लिए हानिकारक है। हाँ, इतना अवश्य कर सकते हैं कि परिवर्तन के लिए बदल-बदल कर कार्य करें। यह बदलाव ही मनुष्य के लिए अवकाश है। अन्यथा मनुष्य के लिए कभी भी अवकाश नहीं होना चाहिए। यह ही सत्य है- यथार्थ है और बुद्धिपूर्वक भी है।

मनुष्य को उपासना (ईश्वर प्राप्ति के लिए) इसलिए करना चाहिए कि उसे पूर्ण सुख, दु:ख रहित सुख मिल सके। इसलिए उपासना का अभ्यास सुख के लिए है और वह सुख भी ईश्वरीय सुख है एवं अपरिमित सुख भी है। लगातार मिलने वाला सुख है, जिसमें लेशमात्र भी दु:ख मिला हुआ नहीं है। ऐसे सुख के लिए उपासना की जा रही हो और उस उपासना के अभ्यास को रोक लिया जाये, ऐसा कैसे हो सकता है? इसलिए लम्बे काल तक करने के साथ-साथ निरन्तर बिना रुके अभ्यास करने की बात कही गई है। इसीलिए ऋषि-महर्षियों ने मनुष्यों के सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य (ईश्वर प्राप्ति रूप लक्ष्य) को पाने के लिए विशेष अभ्यास की चर्चा की है। जिससे मनुष्य अभ्यास की सूक्ष्मता को जानकर-समझ कर उत्तम विधि से अभ्यास कर सके और अपने ऊँचे लक्ष्य को पा सके। अभ्यास की

जहाँ दीर्घकाल रूपी विशेषता है वहाँ अभ्यास की दूसरी विशेषता निरन्तरता भी है। जिस अभ्यास में दीर्घकाल एवं निरन्तरता जुड़ी हों वह अभ्यास फलदायी कैसे नहीं हो सकता अर्थात् अवश्य फलदायी बनेगा।

दीर्घकाल रूपी और निरन्तरता रूपी विशेषताएँ जहाँ अभ्यास को विशेषित करती हैं वहाँ अभ्यास की एक तीसरी विशेषता भी है। वह विशेषता है **'सत्कारपूर्वक'** अर्थात् अभ्यास सत्कार पूर्वक करना चाहिए। मनुष्य जिस उत्तम-पवित्र सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए अभ्यास कर रहा हो, तो वहाँ सत्कार वाला अभ्यास न हो यह कैसे हो सकता है। इसलिए दीर्घकाल और निरन्तरता के साथ-साथ सत्कारपूर्वक अभ्यास करने से ही अभ्यास फलदायी बन पायेगा। इसलिए सत्कार का विशेष महत्त्व है। यहाँ सत्कार शब्द का क्या अभिप्राय है? योगदर्शन के भाष्यकार महर्षि वेद व्यास ने सत्कार के सम्बन्ध में कहा है- **'तपसा ब्रह्मचर्येण विद्यया श्रद्धया च संपादितः सत्कारवान् दृढभूमिर्भवति।'** यहाँ पर महर्षि ने सत्कार शब्द के चार अर्थ बताये हैं- तप, ब्रह्मचर्य, विद्या और श्रद्धा। इन चारों को सत्कार शब्द से कहा है। सत्कारपूर्वक अभ्यास करना चाहिए अर्थात् मनुष्य जिस लक्ष्य का अभ्यास करता है, उस अभ्यास को तपस्या पूर्वक, ब्रह्मचर्य (संयम) पूर्वक, विद्या पूर्वक और श्रद्धा पूर्वक करे। ऐसा करने पर अभ्यास अवश्य ही फलदायी बनता है, इसमें किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं है।

तपस्यापूर्वक, ब्रह्मचर्यपूर्वक, विद्यापूर्वक एवं श्रद्धापूर्वक की गई उपासना का अभ्यास ईश्वर प्राप्ति रूप लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त करा लेता है। **तपपूर्वक अभ्यासः**- प्रायः मनुष्य जिस लक्ष्य को लेकर अभ्यास करता है, उस अभ्यास को लम्बे काल तक करता हुआ, उसमें निरन्तरता भी लाता है। परन्तु निरन्तर अभ्यास करता हुआ अनेक बार वह हताश-निराश होने लगता है। जब हताशा-निराशा व्यवहार में आने लगती है, तो अभ्यास में शिथिलता आ जाती है। फिर मनुष्य धीरे-धीरे अपने लक्ष्य से भटकने लगता है। इसलिए अभ्यास में तप को जोड़ा गया है। यदि मनुष्य तपस्यापूर्वक अभ्यास करता जाये अर्थात् चाहे सर्दी हो या गर्मी, चाहे भूख हो या प्यास, चाहे सम्मान हो या अपमान, चाहे स्तुति हो या निन्दा इत्यादि। इन सभी द्वन्द्वों को लक्ष्य प्राप्ति के लिए सहर्ष स्वीकार करता है। ऐसी स्थिति में अभ्यास अवश्य ही फलदायी बन सकता है। मनुष्य सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, मान-अपमान आदि से होने वाले दुःखों को इसलिए सहन करता है, क्योंकि उसे बड़े-बड़े दुःखों से बचना है। योग साधक अपनी बुद्धि का पूर्ण रूप से उपयोग में लाने वाला होता है। इसलिए वह सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास आदि से मिलने वाले छोटे-छोटे दुःखों को स्वीकार करता हुआ बड़े-बड़े दुःखों से छूटने के मार्ग को प्रशस्त करता रहता है। इसी प्रकार सांसारिक सभी सुखों को इसलिए त्याग करता है, जिससे ईश्वरीय परमानन्द को पाने का मार्ग प्रशस्त हो जाये। ऐसा कार्य बहुत बड़ी भारी तपस्या के बिना सम्भव नहीं हो सकता। इसलिए अभ्यास में तप को स्वीकार किया है। तपस्यापूर्वक किया गया अभ्यास अवश्य ही फलदायी होता है।

ब्रह्मचर्यपूर्वक अभ्यासः- आज समाज की दृष्टि यानि नज़रिया बदल गया है। चकाचौंध में फंस कर मनुष्य अपने को विकसित मान रहा है और जैसे-जैसे चकाचौंध बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे स्वयं तदनुरूप बनता जा रहा है। इस प्रकार का व्यक्ति ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता। एक ओर मनुष्य स्वयं को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र और श्री कृष्ण की सन्तान मानता है और दूसरी ओर वह भौतिकवाद में फंसकर ब्रह्मचर्य का हनन करता जा रहा है। जो स्वयं को विकासशील एवं ज्ञानी मानने वाले को वेद का सूक्ष्म विज्ञान तब तक समझ में नहीं आयेगा जब तक स्वयं को संयमित नहीं करेगा। एक प्रकार से ब्रह्मचर्य का पालन न करने वाले वेद की निन्दा कर रहे हैं। क्योंकि वेद स्वयं कहता है कि **'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।'** (अथर्ववेद ११.५.१९) अर्थात् योगाभ्यासी रज व वीर्य की रक्षा करते हुए यानि ब्रह्मचर्य का अभ्यास करते हुए अपने लक्ष्य को पा लेते हैं। मनुष्य संयम रूपी ब्रह्मचर्य का अभ्यास लम्बे काल तक निरन्तरता से तपस्या के साथ करता जाये, तो निश्चित रूप से अभ्यास फलदायी बनता है।

विद्यापूर्वक अभ्यासः- मनुष्य अभ्यास तो बहुत करता रहता है। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिस क्षेत्र में मनुष्य अभ्यास नहीं करता हो। परन्तु अभ्यास करने वाला सफल ही होता हो, ऐसा नहीं है। क्योंकि अभ्यास कैसा करता है उस पर निर्भर करता है अर्थात् वह अभ्यास अविद्यापूर्वक (मूर्खता से युक्त हो कर) करता है अथवा विद्यापूर्वक करता है। अभ्यास करता हुआ दूसरों को हराने की भावना, दिखाने की भावना आदि से युक्त रहता है, तो समझना चाहिए कि उसका अभ्यास अविद्यापूर्वक है। यदि दूसरों को हराने या दिखाने आदि की भावना से रहित होकर, बस

मुझे जीतना है, आगे बढ़ना है, उन्नत होना है, अपने लक्ष्य को पूरा करना है, दूसरा आगे बढ़ता है तो बढ़े पर मैं भी आगे बढ़ूँ इस भावना से युक्त होकर अभ्यास करता है, तो समझना चाहिए कि उसका अभ्यास विद्यापूर्वक है। जब मनुष्य यथार्थ जानकारी के अनुरूप अभ्यास करता है तब मनुष्य की निर्णय करने वाली बुद्धि उचित निर्णय देगी। व्यक्ति का मन जानकारी के अनुरूप ही विचार या विमर्श करेगा। मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियाँ संयमित होकर ही नवीन जानकारी प्राप्त करेंगी। कर्मेन्द्रियाँ उन्हीं कर्मों को करेंगी जिनको करने से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। मनुष्य अपने शरीर को ज्ञान के अनुरूप ही रखेगा, जिससे शरीर रोगमुक्त बने। व्यक्ति अपने शरीर, इन्द्रियों, मन, अहंकार और महतत्त्वरूपी बुद्धि को लक्ष्य के अनुरूप बनाकर विद्या रूपी अभ्यास के माध्यम से अपने लक्ष्य को सिद्ध करेगा। नहीं तो अविद्या लक्ष्य को कभी सिद्ध होने नहीं देती है।

श्रद्धापूर्वक अभ्यासः- श्रद्धा में दो शब्द हैं एक 'श्रत्' दूसरा 'धा' श्रत् का अर्थ है 'सत्य' और धा का अर्थ है 'धारण करना'। जिस व्यवहार से सत्य को धारण किया जाता है, उसे श्रद्धा कहते हैं। मनुष्य किसी क्षेत्र में अभ्यास करता है, तो श्रद्धापूर्वक ही करता है। परन्तु मुक्ति का क्षेत्र ऐसा क्षेत्र है कि जिसमें परमेश्वर को प्राप्त करना है और परमेश्वर प्रत्यक्ष दिखता नहीं है। ऐसी कठिन परिस्थिति में अभ्यास करना और वह भी कुछ समय या कुछ वर्ष या जीवन पर्यन्त भी तो नहीं? यह एक, दो जन्म भी तो नहीं अनेकों जन्मों तक अभ्यास करना है। वह अभ्यास लम्बे काल, निरन्तरता के साथ, तपस्या, ब्रह्मचर्य, विद्या के साथ-साथ श्रद्धापूर्वक हो और उस श्रद्धा में न्यूनता भी न आये। क्या यह सम्भव है? हाँ, अवश्य सम्भव है। क्योंकि सम्भव भी अनेक बार असम्भव के रूप में दिखने लगता है। परन्तु असम्भव असम्भव ही रहेगा वह सम्भव नहीं बनता। हाँ, सम्भव को मूर्तरूप देने वाले यदि मूर्तरूप न दें, तो सम्भव भी असम्भव बन जायेगा। परन्तु कोई-कोई विरला ही उसे सम्भव बना पाता है। क्योंकि वह विद्यापूर्वक अभ्यास करता हुआ हताशा-निराशा से रहित होकर परमेश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए श्रद्धापूर्वक अभ्यास करता है। श्रद्धा केवल ईश्वर में ही हो ऐसा नहीं, जो-जो ईश्वर को प्राप्त कराने के साधन हैं, उन सब में श्रद्धा रखता है। मनुष्य स्वयं=आत्मा के प्रति भी पूर्ण श्रद्धा (स्वयं के प्रति) विश्वास रखता है कि मैं अपने लक्ष्य को अवश्य पूर्ण कर सकता हूँ। लक्ष्य में श्रद्धा, साधनों में श्रद्धा और साधक-स्वयं में श्रद्धा रखना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रायः मनुष्य का जीवन क्रियात्मक न होकर शब्दात्मक (पुस्तकीय) होता है। इसलिए व्यवहार में असफल होता है। इस कारण योग साधक अपने जीवन को क्रियात्मक रूप देते हुए लम्बेकाल तक, निरन्तरता से, सत्कारपूर्वक अर्थात् तपस्यापूर्वक, ब्रह्मचर्यपूर्वक, विद्यापूर्वक और श्रद्धापूर्वक अभ्यास करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। जिस अभ्यास में तीन विशेषण (दीर्घकाल, निरन्तर, सत्कार) हों वह अभ्यास कभी असफल नहीं हो सकता। इसलिए किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए तीनों विशेषणों वाले अभ्यास को अपनाया जाये, तो सफलता सुनिश्चित है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

तर्क के विना कोई भी विद्या किसी मनुष्य को नहीं होती और विद्या के विना पदार्थों से उपयोग भी कोई नहीं ले सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५६

मनुष्यों को युक्ति और विद्या से सेवन किये हुए सब सृष्टिस्थ पदार्थ शरीर, आत्मा और सामाजिक सुख कराने वाले होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५७

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

स्वामी श्रद्धानन्द जी का अनूठा रूपः- आर्यसमाज के इतिहास, उपलब्धियों व दार्शनिक दृष्टिकोण पर नये सिरे से गम्भीर चिन्तन करने की आवश्यकता है। गत चालीस वर्षों में आर्यसमाज अपने परम धर्म-अपने लक्ष्य से विमुख हो गया है। घुसपैठियों ने तो जो करना था सो किया ही कुछ दिशाहीन हितैषी बने बैठे वक्ताओं व लेखकों ने भी आर्यसमाज को भटकाने का खूब उद्यम किया है। आर्यसमाज में प्रभावशाली वक्ता, लेखक व गवेषक कहाने के लिए मैक्समूलर, रोमाँ रोलाँ, मोनियर विलियम्ज, राजा राममोहन राय, रमा बाई, पादरी स्कॉट, सर सैयद अहमद, पादरी नीलकण्ठ के नामों की माला फेरने का फ़ैशन एक महारोग बन गया है।

जिन्होंने ऋषि मिशन पर जानें वार दीं, धर्म प्रचार करते हुए असह्य कष्ट झेले, अग्नि परीक्षा दी उन बड़े छोटे विद्वानों व सेवकों की उपेक्षा ही नहीं की गई उन्हें विस्मृति के अथाह सागर में डुबो दिया गया है। इस विषय पर एक अच्छी खोजपूर्ण पुस्तक लिखनी पड़ेगी। आज एक उदाहरण देकर आगे चलते हैं। दिल्ली में शुद्धि सभा के पत्र में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ पूज्य मालवीय जी का चित्र दिया जाता है। मालवीय जी ने मलकाना शुद्धि में साथ दिया, यह सत्य है परन्तु क्या दस-बीस की कहीं शुद्धि कभी की?

इसके विपरीत स्वामी चिदानन्द जी ने सिर हथेली पर धर कर शुद्धि-आन्दोलन को बढ़ाया, शुद्धि सभा का निर्माण किया। कारागार की कठोर यातनायें सहीं। उनकी इस शुद्धि सभा के वर्तमान अधिकारी कभी चर्चा करते हैं? उनका फोटो कहीं किसी ने छपवाया? **केवल परोपकारी में उनके एक ऐतिहासिक अभियोग पर कुछ लिखा गया।**

आर्यसमाज के निर्माताओं में लाला मुरलीधर नाम के एक विद्वान्, शास्त्रार्थ महारथी और नेता हुए हैं। आपकी चर्चा करते हुए भारतीय जी ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ५५० पर ऋषि जीवन की एक घटना देते हुए लिखा है, ''एक दिन जब लाला मुरलीधर नामक एक सज्जन ने उनसे गुरु मन्त्र देने की प्रार्थना की.....।''

यह पंक्ति पढ़कर सेवक का हृदय बहुत आहत हुआ। अपने ग्रन्थ में गोरे-गोरे परकीय लोगों के चित्र देकर, ऋषि के बलिदानी शिष्यों का कोई चित्र न देना हमें इतना नहीं चुभा जितना पूज्य मुरलीधर जी को **'एक सज्जन'** मात्र बताना। लाला जी ने आर्यसमाज को नररत्न आत्माराम, लाला देवीचन्द जैसे सपूत दिये। मुरलीधर जी ने अपने **गुरु अमरावसिंह जी रुड़की को आर्यसमाजी बनाकर एक महाविद्वान् दिया।** विद्वान् आर्य नेता को भारतीय जी ने 'एक सज्जन' मात्र बना डाला। अब प्रादेशिक सभा ही न जाने किसकी जेब में है जिसकी लाला जी ने अथक सेवा की।

इन्हीं लाला मुरलीधर जी पर मार्च के अन्त अथवा अप्रैल सन् १८९० में पं. शिवनारायण अग्निहोत्री ने अपने पत्र में एक घटिया वार किया। उन्हें घृणास्पद शब्दों में **'एक हिन्दोस्तानी बानिया (बनिया)'** लिखकर आपकी निन्दा की। मुरलीधर जी जाति-पाँति सूचक शब्द का प्रयोग ही नहीं करते थे। नास्तिक देवगुरु भगवान् शिवनारायण ने अपने लेख में मुरलीधर जी का नाम नहीं दिया था। देवगुरु की टिप्पणी पढ़कर पूजनीय महात्मा मुंशीराम जी ने नास्तिक शिवनारायण को आड़े हाथों लेते हुए अप्रैल १२ सन् १८९० के 'सद्धर्मप्रचारक' में एक पठनीय सम्पादकीय दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के विलक्षण व्यक्तित्व का अनूठापन यही था कि वे निडर होकर ऋषि मिशन तथा प्रत्येक ऋषि भक्त की रक्षा के लिए आगे आकर डट जाते थे। रामविचार ने व्यंग्य बाण चलाकर ''**आदर्श की हवाओं में उड़ने वाला स्वामी श्रद्धानन्द**'' लिखकर अपने मन की भड़ास निकाली या हीन भावना दर्शायी।

इस प्रसंग को आज यहीं समाप्त करते हुए यह बताना भी रुचिकर व उपयोगी होगा कि आर्य सामाजिक साहित्य तथा पुराने पत्रों में कभी किसी ने यह नहीं लिखा कि लाला मुरलीधर बनिया या अग्रवाल थे। देवगुरु को लाला जी रुड़की से ही जानते थे। दोनों वहीं पढ़े। इकट्ठे पढ़े सो शिवनारायण ने तब पता कर लिया कि वे बनिया कुल में जन्मे। मुरलीधर जी ने समाज को अनेक रत्न दिये। उनकी सोच जातिवादी नहीं थी। उनका सर्वस्व आर्यसमाज था।

इतिहास का यह तथ्यः- पं. गणपति शर्मा जी के श्रीनगर शास्त्रार्थ की चर्चा करते हुए कई भाई यह लिखते व कहते रहते हैं कि उस समय जम्मू कश्मीर में आर्यसमाज के प्रचार पर प्रतिबन्ध था। हम परोपकारी में इस भ्रान्ति का

निवारण कर चुके हैं। आज पुनः इतिहास की सुरक्षा के लिए एक और ठोस प्रमाण देते हैं। धर्मवीर पं. लेखराम जी के ग्रन्थ संग्रह 'कुल्लियाते आर्य मुसाफिर' में ऋषि के बलिदान के थोड़ा समय बाद के कुछ प्रतिष्ठित आर्यसमाजियों की नामावली में पण्डित जी ने जम्मू-कश्मीर के एक आर्यसमाजी जज पं. नारायण कौल जी का नाम[१] भी दिया है। स्मरण रहे कि पण्डित लेखराम जी ने सन् १८८७ में अपने एक ग्रन्थ में यह नामावली दी थी। श्रीनगर का शास्त्रार्थ तो इसके कई वर्ष पश्चात् हुआ था।

दिशाहीन पत्र-पत्रिकायें:- अप्रैल का महीना बीत गया। इस मास में आर्यसमाज के सिद्धान्तों व संगठन पर अपना सर्वस्व वार देने वाले कई महापुरुषों के दिवस पड़ते हैं। आर्यसमाज की सभाओं के पत्रों में किसी अच्छे जानकार लेखक का पं. नरेन्द्र जी, पं. रामचन्द्र जी देहलवी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, वीर राजपाल पर कोई पठनीय लेख छपने की सूचना नहीं मिली। प्रिय श्री भावेश मेरजा तथा धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु उत्तम लेख लिखते हैं। वे भी व्यस्त होने से कुछ न लिख सके। राजनैतिक रुचि वाले अधकचरे इतिहास विशेषज्ञ संसनीपूर्ण विषय लेकर क्रान्तिकारियों पर जो कुछ लिखते हैं उनके लेखों का क्या महत्त्व? इससे मिशन की भी क्या सेवा? दैनिक पत्रों में अनुभवी कुशल लेखक श्री चन्द्रशेखर आजाद, वीर भगतसिंह, लाला लाजपतराय पर स्तरीय लेख देते रहते हैं परन्तु दैनिक पत्रों में वीर राजपाल, पं. रामचन्द्र जी देहलवी के लिये स्थान नहीं। आर्यसमाज ने उन्हें विसार दिया। कहिये! कैसे धर्मप्रचार होगा?

१. पं. नरेन्द्र जी का तप, शौर्य व बलिदान किसी भी बड़े से बड़े क्रान्तिकारी से कम नहीं। हैदराबाद राज्य का एकमेव क्रान्तिवीर जिसे पिंजरे में बन्द करके कालेपानी मनानूर में रखा गया वह स्वामी श्रद्धानन्द जी का लाडला नरेन्द्र ही था।

२. देश के क्रान्तिकारियों के इतिहास में पं. नरेन्द्र ही इकलौता पत्रकार है जिसकी लौह लेखनी ने क्रूर अन्यायी निज़ामशाही को ऐसा कम्पाया कि पण्डित जी को कालेपानी भेजने की धमकी दी गई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी तथा आचार्य रामदेव जी के राज्य के भ्रमण के कारण पं. नरेन्द्र जी को तत्काल कालेपानी नहीं भेजा जा सका। सरकार की धौंस से ऋषि का दुलारा प्यारा नरेन्द्र नहीं डगमगाया। क्या यह धर्मद्रोह नहीं जो ऐसे विलक्षण नेता को परली से लेकर दिल्ली तक सब भूल गये? परोपकारी में पृथक् लेख तो न दिया जा सका परन्तु पूरा वर्ष उनका पुण्य स्मरण किया जाता है।

३. जंगल में सिंह कहीं से नरनाहर नरेन्द्र का पता लगा कर आ गया। पिंजरे में सोये आर्य केसरी नरेन्द्र के पैर सीखचों में से चाटने लग गया। दोनों का संवाद मेरी रचना:- **'पिंजरे वाला शेर दहाड़ा'** में पढ़कर पं. नरेन्द्र जी के ऋण का कुछ तो स्मरण करें।

४. गुलबर्गा हत्याकाण्ड क्या जलियाँवाला से कम था? पण्डित जी के पैर की टांग की हड्डी तोड़ दी गई। सभा के क्लर्क हीरालाल की अमानुषिक पिटाई की गई। देश भर में हाहाकार मचा तो सरकार ने पण्डित जी के उपचार का कुछ मन बनाया। दीनबन्धु प्यारे नरेन्द्र ने यह कहकर इलाज करवाने से इनकार कर दिया कि पहले हीरालाल जी का इलाज होगा तो फिर मैं इलाज करवाऊँगा। कहिये! ऐसा बलिदानी जीवनदानी किसने देखा है?

५. सेवक के हृदय में भावों की बाढ़ आ गई हैं। क्या-क्या लिखा जावे? महामानव नरेन्द्र क्रान्तिवीर की नोकीली टोपी और चमकते-दमकते नयनों का स्मरण करके हम स्वयं को ऊर्जावान् मानते हैं। हैदराबाद के एक पत्रकार साहित्यकार ने पण्डित जी पर हमारा ग्रन्थ पढ़कर पण्डित जी के प्यारे शिष्य डॉ. विजयवीर जी से सम्पर्क करके कहा, ''मैं पण्डित जी के सर्वथा नये-नये अप्रकाशित प्रेरक प्रसंग संग्रहीत कर प्रकाशित करना चाहता हूँ।'' कुछ सहयोग कीजिये। विजयवीर जी ने कहा, ''**इस उद्देश्य से आपको अबोहर जाना होगा।** नई सामग्री जिज्ञासु जी दे सकते हैं। उनके पास बहुत कुछ है।''

जब तक प्राणों में प्राण और श्वासों में श्वास है यह सेवक आर्यसमाज के प्राणवीरों पर नई-नई खोज करके देता रहेगा भले ही तथाकथित क्रान्तिकारी वक्ताओं व नामधारी आर्यसमाजियों को इन दिलजलों के इतिहास की भूख न हो। प्राणवीरों से द्रोह अक्षम्य है।

पं. रामचन्द्र जी देहलवी:- बहुत से लोगों को आत्म-प्रचार व आत्म प्रशंसा का महारोग है। इससे आर्यसमाज की बहुत क्षति हो रही है। एक विदेशी मुसलमान भाई की सत्प्रेरणा से हमने पूज्य पण्डित जी पर अपना ग्रन्थ लिखते हुए अपनी ऊहा से यह प्रश्न उठाया कि पण्डित जी ने गुरुमुख से दर्शन पढ़े होंगे। उनके गुरु स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ही हो सकते हैं। हमने अपने तर्क देकर इस प्रश्न का यह उत्तर ग्रन्थ में दे दिया। मेरठ क्षेत्र में श्री स्वामी पूर्णानन्द जी के शिष्य एक ग्रामीण आर्य प्रचारक ने तत्काल

यह प्रसंग पढ़कर सूचना भेजी कि आपका निष्कर्ष ठीक है। श्री मँगूराम आर्य ने लिखा, ''मेरी उपस्थिति में हमारे गृह पर मेरे पिता जी को पूज्य पण्डित जी ने कहा था कि मैंने स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज से न्याय आदि दर्शन पढ़े।''

इसके पश्चात् श्री पं. बिहारीलाल जी की एक पुस्तिका मिल गई। दोनों समकालीन थे। श्री पं. बिहारीलाल जी ने भी यही लिखा है कि देहलवी जी ने महाराज दर्शनानन्द जी से दर्शनों का ज्ञान प्राप्त किया। सन् १८५७ के विप्लव से लेकर नेता जी सुभाष बोस के विशेषज्ञ आर्यसमाजियों ने परोपकारी में यह सब कुछ पढ़कर भी अपने तार्किक शिरोमणि पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी की उपलब्धियों व सेवाओं में कुछ भी रुचि नहीं दिखाई।

पण्डित जी, राजा सर किशनप्रसाद, ऋषि दयानन्द और इस्लामः- लीजिये आज परोपकारी के माध्यम से इतिहास के कुछ लुप्त-गुप्त पृष्ठों का अनावरण करते हैं। जीवन के इस मोड़ पर प्रभु की कृपा से हमें इस मिशन में नई-नई सफलतायें प्राप्त हो रही हैं। इसमें हमारी कोई विशेषता नहीं है। यह तो सत्गुरु महाबलिदानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय व महाशय कृष्ण जी के शुभ आशीर्वाद का फल है।

'**परोपकारी**' के पाठकों को हम बता चुके हैं कि निजाम उस्मान का प्रधानमन्त्री राजा सर किशनप्रसाद मूलतः कपूरथला का खत्री था। देहलवी जी के जीवन चरित्र में यह बता दिया था कि सर किशनप्रसाद को मुसलमान बनने से श्रद्धेय देहलवी जी ने ही बचाया था। हम यह भी बता चुके हैं कि कभी राजा साहब ने सद्धर्म प्रचारक में ऋषि की शान में एक लम्बी कविता लिखी थी।

आज हम यह बताना चाहते हैं कि इन्हीं सर किशनप्रसाद को 'कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी' और 'उन्नीसवीं सदी का महर्षि' जैसी गन्दी पुस्तकों के छपने पर तो मुँह खोलने की हिम्मत न पड़ी परन्तु 'रंगीला रसूल' जब प्रत्युत्तर में आर्यों को छापना पड़ा तो राजा जी ने आर्यों को कोसने में बड़े-बड़े मोमिनों को पछाड़ कर रख दिया और मुसलमानों की प्रशंसा के पुल बाँध दिये। उस समय राजा जी का झुकाव खुलकर इस्लाम की ओर था। इसके थोड़ा समय पश्चात् देहलवी जी हैदराबाद की प्रचार यात्रा पर गये। मित्रों से देहलवी जी की ज्ञानप्रसूता वाणी, अनूठे तर्कों व वाणी के जादू के बारे में सुनकर देहलवी जी को अपने निवास पर आमन्त्रित किया। अपने प्रश्नों व शंकाओं का समाधान पाकर राजा जी के मन व मस्तिष्क से इस्लाम का प्रभाव जाता रहा। आर्यसमाज के प्रति इससे पहले कहे गये राजा जी के दिल दुखाने वाले वाक्य यहाँ क्या दें? जो पौराणिक आज भी गन्दे-गन्दे शब्दों का प्रयोग करके ऋषि की निन्दा को ही सनातन धर्म प्रचार मानते हैं वे राजा सर किशनप्रसाद के सदृश किसी को विधर्मी बनने से बचाने का एक तो उदाहरण दें।

एक वयोवृद्ध गुणसम्पन्न आर्य विचारक की कामनाः- भारत के जाने-माने वैद्य और आर्य विचारक डॉ. वसन्त जी परोपकारी के आजीवन सदस्य हैं। आप एक तपस्वी देशभक्त आर्य परिवार के सदस्य हैं। आपने अपने २५ अप्रैल के पत्र में सेवक को लिखा है। तड़प-झड़प में नई-नई खोज, प्रमाणों व प्रेरक प्रसंगों की चर्चा करते हुए आपने लिखा है ''यह सब आपके साथ ही चला जाएगा।'' फिर लिखा है, ''आपने कोई उत्तराधिकारी तो बनाया नहीं'' अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए आपने अपना कामनायें व सद्भावनायें भी व्यक्त कर दी हैं। ऐसे सब शुभचिन्तकों, प्रेमियों, ऋषि भक्तों व समाज सेवियों को बताने का डॉ. वसन्त जी ने यह अच्छा अवसर दिया है कि मैं एक लम्बे समय से ऋषि मिशन के लिए समर्पित सुयोग्य रक्षक व अपने उत्तराधिकारी तैयार करने में ही लगा हूँ। प्रिय श्री धर्मेन्द्र जी 'जिज्ञासु', प्रिय श्री अनिल आर्य, गुण सम्पन्न श्री लक्ष्मण सरीखे कई रत्न मेरे उत्तराधिकारी बनेंगे। डॉ. हर्षवर्धन की कुछ समस्यायें हैं। वह समाज सेवा में कुछ कर दिखायेगा। ऐसा मुझे विश्वास है। मेरी पुत्रियों की सन्तान भी ऋषि मिशन की रक्षक बनेंगी। मेरा एक नाती पुलकित वैज्ञानिक बनकर तो चमकेगा ही वह निष्ठावान् सिद्धान्त प्रेमी आर्य है। मेरी पुत्री रश्मि की बेटी सुकृति भी वैज्ञानिक बन रही है। उसने एक बार वेद (गायत्री मन्त्र) पर किये गये वार प्रहार का अपने संस्थान में उत्तर देकर सबको दंग भी किया और प्रभावित भी। वह साहित्यिक प्रतिभा भी रखती है। मेरा एक और नाती लावण्य दैनिक यज्ञ करता है, पूरा वर्ष मेरे सम्पर्क में रहता है। उसके माता-पिता उसे वर्ष में एक बार संस्कार विचार लेने मुम्बई से अबोहर भेजते हैं। वह डॉ. वसन्त जी से भेंट करने जायेगा। अधिक क्या लिखूँ। हवाई बातें तो नहीं करता परन्तु निराश नहीं करूँगा। अपने पीछे ऋषि मिशन के रक्षकों की अच्छी सेना देकर संसार से जाऊँगा।

यह धर्म प्रचार नहीं, इतिहास प्रदूषण हैः- 'आर्य सन्देश' दिल्ली के एक पाठक श्री सुखवीर आर्य ने इस

पत्रिका के २४ मार्च २०१४ के अंक में श्री डॉ. विवेक आर्य के हुतात्मा भगतसिंह के ''मैं नास्तिक क्यों हूँ?'' लेख पर छपे विवेचन पर कुछ प्रश्न पूछे हैं। इस लेख की आवश्यकता ही कुछ नहीं थी। वैदिक धर्म प्रचार के लिए बहुत विषय हैं। श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु ने अनेक लेख व पुस्तकें पढ़कर अपनी पुस्तक में इस पर अपना पठनीय मत दे दिया है। अति उत्साह से किसी भी विषय पर बिना ठोस ज्ञान के लेख दे देना हितकर नहीं। इतिहास भी एक शास्त्र है। एक दो लेख या दो-ढाई पुस्तकें पढ़कर हर कोई आर्यसमाज में इतिहासकार व मत पंथ मर्मज्ञ बन जाता है। यह एक हितकर सोच नहीं। सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने से भगतसिंह के जीवन में क्रान्ति का सूत्रपात हुआ, इस कथन का कोई प्रमाण हमने तो पढ़ा सुना नहीं। आचार्य उदयवीर जी भगतसिंह के गुरु थे, भाई परमानन्द जी भी गुरु थे, श्री वीरेन्द्र साण्डर्स हत्याकाण्ड के सबसे पहले अभियुक्त थे, सबसे छोटी आयु के उनके अन्त समय के अभियुक्त साथी क्रान्तिकारी प्रेमदत्त वर्मा मेरे गुरु थे। शहीद के भाई कुलतारसिंह की एक अन्तिम सभा में पं. निरञ्जन जी तथा मैं भी वक्ता के रूप में आर्यसमाज धूरी में थे। श्री जयचन्द्र विद्यालङ्कार से भी मेरी भेंट हुई। इन लोगों ने इस विषय पर ऐसा कोई लेख नहीं दिया। वीरेन्द्र सन्धु का एतद्विषयक विचार पठनीय व विचारणीय है। श्री वीरेन्द्र जी वीर भगतसिंह के अन्तिम दिनों में उसी कारागार में थे। आपने अपने निधन से पूर्व ट्रिब्यून में अंग्रेजी लेख में वीर भगतसिंह की सोच को नास्तिक ही लिखा। मोगा पंजाब में हम दोनों की चर्चा का विषय यही लेख रहा।

धर्मेन्द्र जी ने गम्भीर चिन्तन करके यथार्थ ही लिखा है कि उस युग की साम्यवादी लहर में **भगतसिंह नास्तिकता आस्तिकता के झूले में झूलते रहे। वीर भगतसिंह को संशयवादी ही कहा जा सकता है।** श्री धर्मेन्द्र जी ने उनके वकील प्राणनाथ मेहता के लेख का उल्लेख किया है। मैंने कॉलेज में प्रवेश लिया तो कम्यूनिस्टों के विचारों के खण्डन के लिए जोरशोर से इसी लेख को तब उठाया। **भगतसिंह देशोद्धार के लिए भारत में पुनर्जन्म की इच्छा व्यक्त करते हैं। साम्यवाद का भवन तो इसी से भूमि पर बिछ जाता है।**

श्री विवेक ने तो लाला लाजपतराय को भी आस्तिक ही लिखा है। पता चला कि आपको यह भी पता नहीं कि लाला जी न वेद को ईश्वरीय वाणी मानते थे और न ही ईश्वर को। हाँ संशय से अन्त काल तक वे भी डोलते रहे। इतिहास तो इतिहास है। **आप इतिहास लिखिये पढ़िये परन्तु गढ़िये नहीं।** श्रीमान् विवेक ने कमाल पाशा को खिलाफत को समाप्त करने वाला लिखा है। यह खोज तो दिल्ली के केजरीवाल जैसी रिसर्च है। अच्छा होता गाँधी जी की आत्मकथा, लाला लाजपतराय साहित्य या थोड़ा इतिहास पढ़कर कुछ प्रामाणिक लिखा होता। जिस विषय का ज्ञान न हो, उससे बचना चाहिये।

''लाला लाजपतराय जिन्होंने जमीनी स्तर पर किसान आन्दोलन का नेतृत्व करने से लेकर.....।'' डॉ. विवेक का यह कथन एक रंगीन कल्पना है। यह इतिहास नहीं। एक गढ़न्त है। अच्छा होता यदि लाला जी का कोई प्रामाणिक जीवन चरित्र, भगतसिंह जी पर वीरेन्द्र सन्धु का ग्रन्थ, लाला लाजपतराय की सर्वप्रथम छपी जीवनी या लाला जी के किसान आन्दोलन पर छपे एक दो लेख कहीं से पूछताछ करके पढ़कर कुछ लिखा जाता। चार छह नाम रटकर कोई इतिहास का ज्ञाता नहीं बन सकता। मेरे सामने एक दुर्लभ ग्रन्थ में छपा लाला जी का ऐतिहासिक लेख '**पंजाब में जनरोष के कारण**' है। इसमें लाला जी तो किसान आन्दोलन के जनक वीर अजीतसिंह व सैयद रज़ा को बताते हैं। लाला जी इसमें कतई सक्रिय नहीं थे। उनकी सहानुभूति तो इनके साथ थी। उन्होंने इस आन्दोलन से अपनी संलिप्तता को भली प्रकार से झुठलाया। हम लाला जी को झूठा नहीं मान सकते। इससे आर्यसमाज का स्तर गिरता जा रहा है। डॉ. अशोक आर्य जी ने श्री अलगूराय जी का ग्रन्थ देखा व पढ़ा है। उन्होंने भी 'किसान आन्दोलन' पर एक ऐसा प्रश्न पूछा। मैंने कहा, भाई यह केजरीवाल युग है। जिसके जी में जो आता है, लिख देता है। क्या किया जा सकता है।

टिप्पणी

१. द्रष्टव्य कुल्लियाते 'आर्यमुसाफ़िर' पृष्ठ ३३३

वेद सदन,अबोहर, पंजाब-१५२११६

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१२ से १९ अक्टूबर, २०१४- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**
सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ऋषि मेला - ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४

वैशेषिक-दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान, में अध्ययन-अध्यापन का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। उसी क्रम में वैशेषिक दर्शन **(स्वामी ब्रह्ममुनि भाष्य सहित)** का **स्वामी विष्वङ् परिव्राजक** द्वारा श्रावण कृष्ण चतुर्थी २०७१ वि. (तदनुसार १५ जुलाई २०१४ ई.) से विधिवत् नियमित सम्पूर्ण अध्यापन कराया जायेगा।

वैशेषिक दर्शन महर्षि कणाद के द्वारा रचित ग्रन्थ है जो कि दस अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में दो आह्निक हैं। इस दर्शन का विषय द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, इन छह पदार्थों के धर्म के तत्त्वज्ञान से अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति कहा है। यह द्रव्य के गुण, कर्मादि के लक्षण सहित किसी कार्य द्रव्य के कारणों का विशद् विवेचन प्रस्तुत करता है।

यह दर्शन ५-६ महिनों में पूर्ण होगा।

इस काल में प्रातः व सायं उपदेश भी सुनने को मिलेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००३७५६ (स्वामी विष्वङ्) **सायं ५.३० से ६.००**। **पता**-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.), ईमेल-psabhaa@gmail.com

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

।। ओ३म् ।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

दु:ख का मूल: मिथ्याज्ञान

- मुमुक्षु मुनि

सांसारिक जीवन दु:खों से भरा पड़ा है। सुखों की प्राप्ति के लिये सुख के साधनों के संग्रह में दु:ख, उन साधनों के रक्षण में दु:ख, फिर उनके विनाश पर दु:ख। एक तत्त्व-दर्शी हर ओर दु:ख ही दु:ख पाता है। महर्षि गौतम के अनुसार दु:ख का कारण जन्म है। जन्म प्रवृत्ति के फलस्वरूप और प्रवृत्ति दोषों से बनती है। दोषों के प्रति मनुष्य मिथ्याज्ञान के कारण प्रवृत्त होता है। इस प्रकार दु:खों का कारण जन्म, जन्म का कारण प्रवृत्ति, प्रवृत्ति का कारण दोष और दोष का कारण मिथ्याज्ञान रहा।

एक सार्वभौम सिद्धान्त है, कि कारण के विनाश होने पर कार्य का विनाश होता है। फलत: मिथ्याज्ञान के नाश से दोषों का नाश, दोषों के नाश से प्रवृत्ति का नाश और प्रवृत्ति के नाश से जन्म का अन्त और जन्म के बिना दु:खों की निवृत्ति होगी। इस प्रकार दु:खों की जड़ में बैठा हुआ मिथ्याज्ञान है। जब तक उसे उखाड़ कर फेंका नहीं जाता दु:खों से छुटकारा नहीं होता।

मिथ्याज्ञान: आत्मा के चेतन अस्तित्व को स्वीकार न करना, शरीरादि जड़ पदार्थों को चेतन आत्मा समझना। दु:ख में सुख, सुख में दु:ख, अनित्य में नित्य, नित्य में अनित्य, की भावना मिथ्याज्ञान है। रक्षा करने में सर्वथा असमर्थ को रक्षक समझकर किसी शक्तिमान् की कल्पित आकृति रचकर उसमें रक्षक की भावना मिथ्याज्ञान है। वैसे ही घृणित, निन्दित प्रसंगों को प्रशंसनीय, त्याज्य को ग्राह्य, ग्राह्य को त्याज्य समझना मिथ्या ज्ञान ही है।

वाणी, शरीर और मन के द्वारा कोई कार्य करना प्रवृत्ति है। जो कि पूर्वकृत कर्मों के सहयोग से हुआ करती है। मानव राग-द्वेष से प्रेरित होकर प्रवृत्ति करता है। सांसारिक प्रत्येक क्रिया में रागादि प्रेरक रूप में विद्यमान रहते हैं। और मिथ्याज्ञान की दशा में रागादि उभरते हुए मानव को पाप-पुण्य की ओर प्रवृत्त करते रहते हैं। भावना यह बनती है, कि कर्मफल कुछ नहीं। और सब प्रवृत्तियाँ आकस्मिक रूप से होती रहती हैं।

दोष विषयक मिथ्याज्ञान, कि आत्मा इस संसार में अपने दोष के कारण से नहीं आता है। यह अनादि काल से ऐसे ही चला आ रहा है। पुर्नजन्म का सिद्धान्त निरर्थक है। न कोई चेतन आत्मा की सत्ता है। जिसका कि देह से वियोग होना मरण और संयोग होना जन्म कहा जाता है। जन्म तो यों ही रज-वीर्य के संयोग से हो जाता है। चेतन नित्य आत्मा के अभाव में पुनर्जन्म अथवा मोक्ष का भी अभाव प्रतिपादित होना मिथ्याज्ञान है।

इसी प्रकार अपवर्ग के बारे में भी मिथ्याज्ञान है, कि इसमें सभी सांसारिक वस्तुओं का वियोग, सभी प्रजातियों एवं अनुभूतियों की समाप्ति, सभी भौतिक चहल-पहल से दूर एक भयावह, सुनसान एकाकीपन की स्थिति रूप निष्क्रिय अपवर्ग की अवहेलना की सोच बनती है। ऐसे मिथ्याज्ञान से व्यक्ति राग-द्वेष के प्रभाव से मिथ्याभाषण दूसरों के प्रति डाह, दम्भ, छलकपट, लोभ आदि दोषों में फंस जाता है। इन दोषों से प्रेरित होकर अपने शरीर, वाणी और मन के द्वारा सम्पन्न होने वाले पाप-पुण्य अथवा शुभाशुभ प्रवृत्ति में धकेल दिया जाता है और जब प्रवृत्ति पाप व अशुभ कार्यों की ओर झुकी रहती है, तब व्यक्ति शरीर से हिंसा, चोरी, व्यभिचार, वाणी से मिथ्या भाषण, कठोर वचन, चुगलखोरी आदि और मन से दूसरों के प्रति द्रोह, दूसरों के धन को अन्याय से हड़पना तथा नास्तिकता आदि का पोषक बन जाता है। इसके विपरीत व्यक्ति पुण्य प्रवृत्ति में दान देना, दूसरों की रक्षा, सेवा करना, सत्य भाषण, मधुर-वार्तालाप, वेदादि सत्य-शास्त्रों का स्वाध्याय, सब प्राणियों के प्रति दयाभाव और श्रद्धाभाव रखने लगता है। यह उभय प्रकार की प्रवृत्ति अच्छे-बुरे जन्म का कारण है।

आत्मा का देह, इन्द्रियों, मन, प्राण आदि से अलग-अलग योनियों के शरीरों से संहत होना जन्म है अर्थात् आत्मा का देहादि के साथ सम्बन्ध हो जाना और आत्मा को दुखादि का अनुभव देहादि से सम्बन्ध में ही सम्भव है। अत: जन्म को दु:ख का कारण कहा गया है।

मिथ्याज्ञान से लेकर दु:ख पर्यन्त परिस्थितियों के निरन्तर चलते रहने का नाम संसार है। तत्त्वज्ञान हो जाने पर मिथ्याज्ञान का नाश हो जाता है। तब मिथ्याज्ञान से होने वाले दोष स्वत: विलीन हो जाते हैं। दोषों के न रहने पर प्रवृत्ति का अभाव होता है। प्रवृत्ति के अभाव में पुर्नजन्म का अवसर नहीं रहता। जन्म के न होने पर दु:ख होने का प्रश्न नहीं उठता। दु:ख की इस नितान्त निवृत्ति का नाम अपवर्ग है। मिथ्याज्ञान जिसका बाधक है। अत: मिथ्याज्ञान की समाप्ति दु:खों का निदान है।

महर्षि गौतम कहते हैं - **दु:खजन्मप्रवृत्तिदोष-मिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तराऽपाये तदनन्तरापायादपवर्ग:।।**

(न्यायदर्शन १.१.२)

- ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड़, अजमेर।

जीव की कर्म स्वतन्त्रता और ईश्वर की ज्ञान स्वतन्त्रता

- सत्येन्द्र सिंह आर्य

कई स्वाध्यायशील लोगों के मन में यह प्रश्न उठता रहता है कि मनुष्य द्वारा भविष्य में किये जाने वाले कर्मों को क्या परमात्मा नियत समय से पूर्व ही जान लेता है? उनका भाव यह होता है कि मनुष्य द्वारा भविष्य में किये जाने वाले स्वतन्त्र कर्मों को ईश्वर नहीं जानता। पिछले दिनों एक पुस्तक का स्वाध्याय करते समय निम्नलिखित पंक्तियाँ दृष्टि में आयीं-

''त्रिकालज्ञ होने का यह अर्थ लगाना कि अमुक व्यक्ति इतने वर्ष बाद उस स्थान पर उसके साथ जाकर यह कार्य करेगा, ठीक नहीं है। जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है। अत: उसके मन में जिस कर्म का अभी विचार नहीं उत्पन्न हुआ , वह ज्ञान का विषय नहीं बना। विचार उत्पन्न होते ही ईश्वर उस कर्म एवं उसके फल को तत्काल पूर्णत: जान लेता है। इस प्रकार ईश्वर त्रिकालज्ञ है। अन्य किसी को इस प्रकार पूर्ण ज्ञान नहीं होता है।''

अब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा ईश्वर की ज्ञान-स्वतन्त्रता विषयक सम्मति उनके जिन-जिन ग्रन्थों में स्पष्टत: दी गयी है, उस पर दृष्टि डालते हैं।

पञ्च महायज्ञ विधि: पुस्तक में अघमर्षण मन्त्रों का अर्थ करते हुए ऋषिवर लिखते हैं-

''ईश्वरज्ञानस्यापरिणामित्वात् पूर्णत्वादनन्तत्वात् सर्वदैकरसत्वाच्च नैव तस्य वृद्धिक्षयव्यभिचाराश्च कदाचित् भवन्ति, अत एवं 'यथापूर्वमकल्पयद्' इत्युक्तम्।''

इसका आर्य भाषा में अर्थ इस प्रकार है- ''ईश्वर का ज्ञान विपरीत कभी नहीं होता किन्तु पूर्ण और अनन्त होने से सर्वदा एक रस ही रहता है, उसमें वृद्धि, क्षय और उल्टापन कभी नहीं होता। इसी कारण से ''**यथापूर्वमकल्पयत्**'' पद का ग्रहण किया है।''

यदि यह मानेंगे कि ''मनुष्य के मन में विचार उत्पन्न होते ही ईश्वर उस कर्म एवं उसके फल को तत्काल पूर्णत: जान लेता है'' तो ईश्वर के ज्ञान में वृद्धि स्वीकार करनी पड़ेगी और ईश्वर का ज्ञान मनुष्य के ज्ञान के अध्यधीन स्वीकार करना पड़ेगा। यह बात महर्षि की उपर्युक्त व्याख्या के विपरीत बैठती है और आगे अन्यत्र देखिए।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रन्थ के ''ईश्वर प्रार्थना विषय'' के अन्तर्गत उद्धृत मन्त्र-

यो भूतंचभव्यंच सर्वंयश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम:।।

का महर्षि जी कृत भाष्य इस प्रकार है-(यो भूतं च.) यो सर्वं भूतभविष्यद्वर्तमानान् कालान् (सर्वं यश्चाधि.) सर्वं जगच्चाधिष्ठति, सर्वाधिष्ठाता सन् कालादूर्ध्वं विराजमानोऽस्ति। (स्वर्य.) यस्य च केवलं निर्विकारं स्व: सुखस्वरूपमस्ति, यस्मिन् दु:खं लेशमात्रमपि नास्ति यदानन्दधनं ब्रह्मास्ति, (तस्मै ज्ये.) तस्मै ज्येष्ठाय सर्वोत्कृष्टाय ब्रह्मणे महतेऽत्यन्तं नमोऽस्तु न:।

भाषार्थ- (यो भूतं.) जो परमेश्वर एक भूतकाल जो व्यतीत हो गया है (च) अनेक चकारों से दूसरा जो वर्तमान है, (भव्यं च) और तीसरा भविष्यत् जो होने वाला है, **इन तीनों कालों के बीच में जो कुछ होता है, उन सब व्यवहारों को वह यथावत् जानता है,** (सर्वं यश्चाधितिष्ठति) तथा जो सब जगत् को अपने विज्ञान से ही जानता, रचता, पालन, लय करता और संसार के सब पदार्थों का अधिष्ठाता अर्थात् स्वामी है, (स्वर्यस्य च केवलं) जिसका सुख ही केवल स्वरूप है जो कि मोक्ष और व्यवहार सुख का भी देने हारा है, (तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम:) ज्येष्ठ अर्थात् सबसे बड़ा सब सामर्थ्य से युक्त ब्रह्म जो परमात्मा है, उसको अत्यन्त प्रेम से हमारा नमस्कार हो। **जो कि सब कालों के ऊपर विराजमान है,** जिसको लेशमात्र भी दु:ख नहीं होता, उस आनन्दघन परमेश्वर को हमारा नमस्कार प्राप्त हो।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ही ''वेद विषय विचार:'' शीर्षक के अन्तर्गत (अग्नि: पूर्वेभि:, ऋग्वेद १.१.२) मन्त्र का अर्थ करते हुए महर्षि जी ने लिखा है-''इस मन्त्र में वेदों के कर्त्ता त्रिकालदर्शी ईश्वर ने भूत, भविष्यत्, वर्तमान तीनों कालों के व्यवहारों को यथावत् जान के कहा है कि वेदों को पढ़ के जो विद्वान् हो चुके हैं वा जो पढ़ते हैं वे प्राचीन और नवीन ऋषि लोग मेरी स्तुति करें तथा ऋषि नाम मन्त्र, प्राण और तर्क का भी है, इससे ही मेरी स्तुति करनी योग्य है।''

इसी ग्रन्थ में ''वेदोत्पत्ति विषय:'' में ऋषिवर लिखते हैं-''ईश्वर का ज्ञान नित्य है, उसकी वृद्धि, क्षय और विपरीतता कभी नहीं होती।''

योगदर्शन के सूत्र-''**स एष पूर्वेषाममि गुरु:**

कालेनानवच्छेदात्'' १.१.२६ का भाषार्थ-''सो ईश्वर नित्य ही है क्योंकि ईश्वर में क्षणादि काल की गति का प्रसार ही नहीं है।''

ऋग्वेद १.२५.११ का भाष्य- **यथेश्वरः सर्वत्राभिव्याप्तः सर्वशक्तिमान् सन् सृष्टिरचनादीन्याश्चर्य्यरूपाणि कृत्वा वस्तूनि विधाय जीवानां त्रिकालस्थानि कर्म्माणि च विदित्वैतेभ्यस्तत्तत्कर्माश्रितं फलं दातुमर्हति।.....**

भावार्थ- जिस प्रकार ईश्वर सब जगह व्याप्त और सर्वशक्तिमान् होने से सृष्टि रचनादि कर्म और जीवों के तीनों कालों के कर्मों को जानकर इनको उन-उन कर्मों के अनुसार फल देने के योग्य है।

सत्यार्थ प्रकाश (ईसाई मत समीक्षा)

(१) ईश्वर ने कहा कि उजियाला होवे और उजियाला हो गया और ईश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है। - पर्व १ आ.३-४

समीक्षा- ''क्या जब ईश्वर ने उजियाले को देखा तभी जाना कि उजियाला अच्छा है? पहिले नहीं जानता था जो जानता होता तो देखकर अच्छा क्यों कहता? जो नहीं जानता तो वह ईश्वर ही नहीं, इसलिए तुम्हारी बाईबल ईश्वरोक्त और उसमें कहा हुआ ईश्वर सर्वज्ञ नहीं है।''

(२) परमेश्वर ईश्वर ने अदन से पूर्व की ओर एक बारी लगाई और उस आदम को, जिसे उसने बनाया था, उसमें रखा। पर्व-२

समीक्षा- जब ईश्वर ने अदन में बाड़ी बनाकर उसमें आदम को रखा तब ईश्वर नहीं जानता था कि इसको पुनः यहाँ से निकालना पड़ेगा।

(३) उस परमेश्वर ईश्वर ने.....आदम को निकाल दिया। पर्व ३

समीक्षक- प्रथम जब उसको बारी में रखा तब उसको भविष्यत् का ज्ञान नहीं था कि इसको पुनः निकालना पड़ेगा, इसलिए ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ नहीं था।

(४) तब आदमी को पृथिवी पर उत्पन्न करने से परमेश्वर पछताया। पर्व ६

समीक्षक- वह ईश्वर ही नहीं जो सर्वज्ञ न हो, न भविष्यत् की बातें जाने। वह जीव है। क्या जब सृष्टि की थी तब आगे मनुष्य दुष्ट होंगे, ऐसा नहीं जानता था?..... यदि वह ईश्वर सर्वज्ञ होता तो ऐसा विषादी क्यों होता?

(५) ईश्वर ने अविराहम की परीक्षा की और परमेश्वर के दूत ने उसे पुकारा.....मैं जानता हूँ कि तू ईश्वर से डरता है। तौरेत पर्व, आ.१-२

समीक्षक- जो बाईबिल का ईश्वर सर्वज्ञ होता तो उसकी भविष्यत् श्रद्धा को भी सर्वज्ञता से जान लेता।

सत्यार्थ प्रकाश- इस्लाम मत समीक्षा

(१) जब हमने फरिश्तों से कहा कि बाबा आदम को दण्डवत् करो, देखा सभी ने दण्डवत् किया परन्तु शैतान ने न माना और अभिमान किया क्योंकि वह भी एक काफिर था।। म.१, सि.१, सू.२

समीक्षक- इससे खुदा सर्वज्ञ नहीं क्योंकि भूत, भविष्यत् और वर्तमान की पूरी बात नहीं जानता, जो जानता होता तो शैतान को पैदा ही क्यों किया?

ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन सम्पादित पं. भगवद्दत्त बी.ए., द्वितीय संस्करण, श्री राम लाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित, सं. २०१२ वि. पृष्ठ ३४६ पर-

(जीवों की तो क्या प्रति जीव के अनेक कर्मों के भी अन्त और संख्या को परमेश्वर यथावत् जानता है।) जो ऐसा न होता तो वह परब्रह्म जीव और उनके अनेक कार्मों का जैसा-जैसा जिस जिस जीव ने कर्म किया है, उन उन का फल न दे सके।

सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में यह विषय प्रश्नोत्तर रूप में दिया गया है-

प्रश्न- जीव स्वतन्त्र है वा परतन्त्र?

उत्तर- अपने कर्त्तव्य कर्मों में स्वतन्त्र और ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है।'स्वतन्त्रः कर्त्ता' यह पाणिनीय व्याकरण का सूत्र है। जो स्वतन्त्र अर्थात् स्वाधीन है वही कर्त्ता है।

प्रश्न- स्वतन्त्र किसको कहते हैं?

उत्तर- जिसके आधीन शरीर, प्राण, इन्द्रिय और अन्तःकरणादि हों। जो स्वतन्त्र न हो तो उसको पाप-पुण्य का फल प्राप्त कभी नहीं हो सकता।.....पराधीन जीव पाप-पुण्य का भागी नहीं हो सकता। इसलिए अपने सामर्थ्यानुकूल कर्म करने में जीव स्वतन्त्र परन्तु जब वह पाप कर चुकता है तब ईश्वर की व्यवस्था में पराधीन होकर पाप के फल भोगता है।

प्रश्न- परमेश्वर त्रिकालदर्शी है, इससे भविष्यत् की बातें जानता है। वह जैसा निश्चय करेगा जीव वैसा ही करेगा। इससे जीवन स्वतन्त्र नहीं और जीव को ईश्वर दण्ड भी नहीं दे सकता क्योंकि जैसा ईश्वर ने अपने ज्ञान से निश्चित किया है, वैसा ही जीव करता है।

उत्तर- ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहना मूर्खता का काम है। क्योंकि जो होकर न रहे वह भूतकाल और न होके होवे

वह भविश्यकाल कहाता है। क्या ईश्वर को कोई ज्ञान होके नहीं रहता तथा न होके होता है?.... ईश्वर का ज्ञान सदा एक रस, अखण्डित वर्तमान रहता है। भूत, भविष्यत् जीवों के लिए है, हाँ जीवों के कर्म की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता ईश्वर में है स्वत: नहीं। जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है, वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमान के ज्ञान और फल देने में ईश्वर स्वतन्त्र और जीव किंचित् वर्तमान और कर्म करने में स्वतन्त्र है। ईश्वर का अनादि ज्ञान होने से जैसा कर्म का ज्ञान है वैसा ही दण्ड देने का भी ज्ञान अनादि है दोनों ज्ञान उसके सत्य हैं, क्या कर्म ज्ञान सच्चा और दण्ड ज्ञान मिथ्या कभी हो सकता? इसलिए इसमें कोई दोष नहीं आता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थों का निरन्तर मनोयोगपूर्वक विशद् स्वाध्याय (सत्यार्थ प्रकाश का तो शताधिक बार) करने वाले आर्यजगत् के एक मूर्धन्य विद्वान् और वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ मनीषी हुए हैं श्री पं. जगदेव सिंह सिद्धान्ती शास्त्री। इस विषय में हम पाठकों के सम्मुख उनके विचार प्रस्तुत करते हैं- मेरा (यानि श्री सिद्धान्ती जी का) मन्तव्य यह है कि- ''जीव द्वारा भविष्य काल में किये जाने वाले स्वन्त्रतापूर्वक कर्मों को ईश्वर सदा से पूर्व ही ठीक-ठीक जानता है। जीव कर्म करे और ईश्वर तब जाने यह बात नहीं है। क्योंकि जीव सदा से स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करता रहता है और ईश्वर सदा से स्वतन्त्रतापूर्वक जानता रहता है। जीव अपने सामर्थ्यानुकूल कर्म करने में स्वतन्त्र है, वह इसलिए कर्म नहीं करता कि ईश्वर जानता है तथा ईश्वर जीव के कर्मों को करने के पश्चात् जाने यह मन्तव्य नहीं है क्योंकि ईश्वर स्वभाव से ही सदा से जीव के कर्मों को जानता है, यह इसलिए कि ईश्वर सर्वज्ञ है, अनन्त है, सर्वव्यापक है, जीव में भी व्यापक होकर रहता है। इस सन्दर्भ का सरलार्थ यह है कि जीव स्वतन्त्रतापूर्वक सदा कर्म करता है और ईश्वर स्वतन्त्रतापूर्वक सदा से जीव के कर्मों को सर्वज्ञता से जानता है। जीव के 'कर्म कर्तृत्व' और ईश्वर के 'ज्ञातृत्व' में सापेक्षता नहीं है। दोनों अपने-अपने रूप में स्वतन्त्र हैं। जीव के कर्म करने और ईश्वर के जानने में आगा-पीछा नहीं है।''

''ईश्वर का स्वरूप नित्य है, अनादि है, अनन्त है। उसमें काल की गति नहीं है। उसका ज्ञान सदा वर्त्तमान रहता है। जीव जैसे स्वतन्त्रता से कर्म करता है ईश्वर वैसे ही सर्वज्ञता से जानता है। और ईश्वर जैसे जानता है जीव वैसे ही करता, जीव करे तो ईश्वर जाने-यह बात नहीं है जीव इसलिए कर्म नहीं करता कि ईश्वर को ज्ञान है, अपितु जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। ईश्वर को ज्ञान होने पर भी, जीव के कर्म करने की स्वतन्त्रता पर कुछ बाधा नहीं। ईश्वर जैसे जीव के कर्मों को स्वतन्त्रता से जानता है, सर्वज्ञ होने के कारण जीव के कर्म की कुछ भी अपेक्षा ईश्वर के ज्ञान के लिए नहीं है और ईश्वर के ज्ञान की भी कुछ अपेक्षा जीव के कर्म के लिए नहीं है। जीव स्वतन्त्रता से करता है और ईश्वर स्वतन्त्रता से जानता है। इसीलिए सत्यार्थ प्रकाश के इसी वचन के इन शब्दों पर विचार हमें करना चाहिए। 'जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है वैसा ही जीव करता है।' ईश्वर स्वभाव से जानता है परन्तु जीव उसके ज्ञान होने पर भी बन्धन में नहीं। बन्धन तो तब होवे जब ईश्वर जीव को वैसा कर्म करने के लिए आदेश देवे। ईश्वर जानता हुआ भी जीव को यह नहीं कहता कि ऐसा कर्म करो। फिर बन्धन कैसा। इसीलिए ईश्वर के ज्ञान के निश्चय होने पर भी जीव स्वतन्त्रता से कर्म करता है न कि ईश्वर के निश्चय से। ईश्वर के ज्ञान से जीव के कर्म की स्वतन्त्रता पर कुछ रुकावट नहीं है।''

सत्यार्थप्रकाश के अतिरिक्त ऋषिवर के अन्य ग्रन्थों से भी एतद्विषयक जो प्रमाण दिये हैं, उनका सार यह है कि परमेश्वर प्रत्येक जीव के अच्छे-बुरे सब कर्मों का ठीक-ठीक रूप सदा से अपनी सर्वज्ञता से जानता है, वह कर्म चाहे भूतकाल के हों, चाहे वर्तमान काल के और चाहे भविष्यत् काल में जीव करेगा। परमेश्वर काल की गति से बाहर है। वह सदा वर्तमान है। जो कर्म जीव के लिए तीन कालों में होते हैं वे ईश्वर के ज्ञान से सदा वर्तमान ही है।

जीव की कर्म स्वतन्त्रता और ईश्वर की सर्वज्ञता के सम्बन्ध में हमने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थों से कुछ प्रमाण देकर ये विचार प्रस्तुत किये हैं। आशा है कि स्वाध्यायशील पाठक उन पर विचार करेंगे।

मेरठ (उ.प्र.)

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र–	रु.
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	५००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	८०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र–	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	३५०.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१००.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	६०.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल	
	प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल	
	द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल	
	पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल	
	दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल	
	प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग	
	सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग	
	सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग)	
	सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	

विविध

५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१२०.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	१०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१५.००
८१.	सन्धिविषय	
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में.....

इन्द्र व उसका सोमपान

- महात्मा चैतन्यमुनि

इन्द्र के सम्बन्ध में जन-साधारण में अनेक प्रकार की काल्पनिक, निराधार, अवैज्ञानिक एवं हास्यास्पद कथाएँ प्रचलित हैं। भागवत पुराण के छठे स्कन्ध के सातवें अध्याय में इस सम्बन्ध में लिखा है कि- 'इन्द्र को त्रिलोकी का ऐश्वर्य पाकर अभिमान हो गया जिसके कारण वह धर्म, मर्यादा एवं सदाचार का उल्लंघन करने लगा। एक समय की बात है वह भरी सभा में अपनी पत्नी शची के साथ अपने ऊँचे सिहांसन पर बैठा हुआ था और उन्चास मरुतगण, आठ वसु, ग्यारह रुद्र आदित्य, ऋषिगण, विश्वदेवा, साध्यगण और दोनों अश्विनि कुमार उनकी सेवा में उपस्थित थे। सिद्ध, चारण, गन्धर्व, ब्रह्मवादी, मुनिगण, विद्याधर अप्सराएँ, किन्नर, पक्षी और नाग उसकी सेवा और स्तुति कर रहे थे....सब ओर ललित स्वर में देवराज इन्द्र की कीर्ति का गान हो रहा था। ऊपर की ओर चन्द्रमण्डल के समान सुन्दर श्वेत छत्र शोभायमान था। चँवर एवं पँखे आदि महाराजोचित सामग्रियाँ यथास्थान सुसज्जित हो सुशोभित हो रहे थे...' इस प्रकार पुराणों में इन्द्र को देवताओं का राजा माना गया है जो सोने का मुकुट पहनता है, उसके हाथ में वज्र रहता है, वह ऐरावत नामक श्वेत हाथी की सवारी करता है, मेनका व रम्भा आदि अप्सराएँ उसके दरबार में नृत्य करती हैं, वह साधनारत ऋषि-मुनियों की तपस्या भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजता है क्योंकि उसे सदा यह डर बना रहता है कि कोई ऋषि मेरे पद को प्राप्त न कर सके। वह स्वयं गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या का चरित्रभ्रष्ट करने के लिए गया था....पुराणों का इन्द्र युद्ध भी करता है, उसने दधीचि की हड्डियों से शस्त्र बनाकर वृत्रासुर का वध किया था....ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में लिखा है कि इन्द्र देवों का राजा था जिसने गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के साथ जार कर्म किया, गौतम त्रषि ने उसे शाप दिया कि तू सहस्त्र भाग वाला हो जा, अहिल्या को शाप दिया कि तू पत्थर हो जा, श्रीराम जी की पादरज से वह शापमुक्त होकर पुनः स्त्री बनी थी। एक अन्य कथा पुराणों में इस प्रकार है कि त्वष्टा के पुत्र वृत्रासुर ने देवों के राजा इन्द्र को निगल लिया जिससे देवता भयभीत होकर विष्णु के पास गए, विष्णु ने उसके मारने का उपाय यह बताया कि समुद्र के झाग को उठाकर उस पर मारना उससे वह मर जाऐगा। इसी प्रकार देवासुर संग्राम की कथा भी है। वृत्रासुर दैत्यों का राजा था जिसके साथ बहुत बड़ी दैत्यों की सेना थी तथा उसका पुरोहित शुक्राचार्य था। इस प्रकार देवताओं का राजा इन्द्र था तथा उसके पास भी सेना थी और उसका पुरोहित बृहस्पति था....राक्षसों को मारने के लिए दधीचि ऋषि जी ने अपनी हड्डियाँ प्रदान की जिनके शस्त्र से इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया....

वास्तविकता यह है कि इन्द्र के नाम पर पौराणिक काल में इस प्रकार की कल्पनाएँ इसलिए गढ़ ली गई क्योंकि वेद में आए इन्द्र, वृत्र, गौतम, अहिल्या, दधीचि, अप्सरा, रम्भा, उर्वशी आदि शब्दों को सही-सही परिप्रेक्ष्य में नहीं समझा गया क्योंकि सायण एवं महिधर आदि तथा पाश्चात्य विद्वानों ने वेद मन्त्रों के अध्यात्म, अधिदैवत और अधियज्ञ आदि अर्थ करने की परम्परा का निर्वहन नहीं किया। पुराण साहित्य तो वैसे भी अनेक प्रकार की अविश्वसनीय, अनर्गल, काल्पनिक, सृष्टिनियम के विरुद्ध बातों तथा हमारी गरिमामयी प्राचीनतम वैदिक-संस्कृति की ज्ञान-गरिमा रूपी विरासत को नीचा दिखाने की बातों से भरा पड़ा है। संभवतः हमारी गरिमापूर्ण संस्कृति एवं समुज्जवल इतिहास को पूर्णरूप से अविश्वसनीय, अवैज्ञानिक, अश्लील और हेय दिखाने के लिए इस प्रकार के साहित्य की रचना विधिवत् करवाई गई होगी और इसका कुपरिणाम भी हम आज देख रहे हैं....इस प्रकार के निराधार ग्रन्थों को विश्वसनीयता की श्रेणी में जाने के लिए इनके रचेता के रूप में महर्षि वेदव्यास जी का नाम लिया जाता है मगर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अभिमत है कि- 'जो अठारह पुराणों के कर्त्ता व्यास जी होते तो इनमें इतने गपोड़े न होते। क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगशास्त्र के भाष्यादि व्यासोक्त ग्रन्थों के देखने से विदित होता है कि व्यास जी बड़े विद्वान् सत्यवादी धार्मिक योगी थे। वे ऐसी मिथ्या कथा कभी न लिखते। और इससे यह सिद्ध होता है कि जिन सम्प्रदायी परस्पर विरोधी लोगों ने भागवतादि नवीन कपोलकल्पित ग्रन्थ बनाए हैं, उनमें व्यास जी के गुणों का लेश भी नहीं था और वेदशास्त्र विरुद्ध असत्यवाद लिखना व्यास सदृश विद्वानों का काम नहीं। किन्तु यह काम (वेद-शास्त्र) विरोधी स्वार्थी अविद्वान् लोगों का है।' अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में महर्षि दयानन्द जी ने प्रमाण भी दिया है कि-'यह भागवत बोप देव का बनाया है,

जिसके भाई जसदेव ने 'गीतगोविन्द' बनाया है। देखो उसने यह श्लोक अपने बनाए 'हिमाद्रि' नामक ग्रन्थ में लिखे हैं कि 'श्रीमद्भागवतपुराण' मैंने बनाया है।' उस लेख के तीन पत्र हमारे पास थे। उनमें से एक पत्र खो गया है। उस पत्र में श्लोकों का जो आशय था, उस आशय के हमने दो श्लोक बनाके नीचे लिखे है। जिसको देखना हो, वह 'हिमाद्रि' ग्रन्थ में देख लेवें-

'हिमाद्रेः सचिवस्यार्थे सूचना क्रियतेऽधुना।
स्कन्धाऽध्यायकथानां च यत्प्रमाणं समासतः।।
श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं च मयोक्तिम्।
विदुषा बोपदेवेन श्रीकृष्णस्य यशोन्वितम्।।'

इसी प्रकार के नष्टपत्र में श्लोक थे। अर्थात् राजा के सचिव हिमाद्रि ने बोपदेव पण्डित से कहा कि-मुझको तुम्हारे बनाये श्रीमद्भागवत के सम्पूर्ण सुनने का अवकाश नहीं है। इसलिए तुम संक्षेप से श्लोकबद्ध सूची पत्र बनाओ। जिसको देख के मैं श्रीमद्भागवत् की कथा को संक्षेप से जान लूँ। सो नीचे लिखा हुआ सूचीपत्र उस 'बोपदेव' ने बनाया। उन में से उस नष्ट पत्र में १० श्लोक खो गए हैं। ग्यारहवें श्लोक से लिखते हैं। ये नीचे लिखे श्लोक सब बोपदेव ने बनाये हैं। वे-

बोधयन्तीति हि प्राहुः....प्रोक्ता द्वौणिजयादयः।।
(इति प्रथम स्कन्धः)

इत्यादि बारह स्कन्धों का सूचीपत्र इसी प्रकार 'बोपदेव' पण्डित ने बनाकर 'हिमाद्रि' सचिव को दिया। जो विस्तार देखना चाहे, वह बोपदेव के बनाये हिमाद्रि ग्रन्थ में देख लेवें। इसी प्रकार अन्य पुराणों की लीला समझनी चाहिए। परन्तु उन्नीस, बीस, इक्कीस एक दूसरे से बढ़कर हैं....पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक जी अपनी टिप्पणी में लिखते हैं-

'द्र.-नीलकण्ठ कृत देवीभागवत की टीका का उपोद्घात-'विष्णु-भागवतं बोपदेवकृतमिति वदन्ति।'

शाहजहाँ के समकालिक कवीन्द्राचार्य के पुस्तकालय के सूची पत्र बडोदा से छपा में भागवत को बोपदेवकृत लिखा है।'

इन्द्र के सम्बन्ध में विशद् चर्चा हम आगे करने का प्रयास करेंगे मगर यहाँ पर केवल इन पौराणिक कथाओं के वैदिक स्वरूप पर थोड़ा सा विचार कर लेते हैं। वेद में इन्द्र सूर्य का भी नाम है तथा वृत्र बादलों का नाम है। ऋग्वेद के एक मन्त्र (१-३२-१०) पर विचार करते हुए यास्क लिखते हैं-

तत्र को वृत्रो मेघ इति नैरुक्ता अपां च ज्योतिषश्च मिश्रीभाव कर्मणा वर्षकर्म जायते।

अर्थात् वृत्र नाम मेघ का है। सूर्य की किरणों तथा बादल के जल के मेल से वर्षा होती है। **ऋषेर्दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यानसंयुक्ता।** ऋषि अर्थ को समझने के लिए आलंकारिक आख्यानों का सहारा लेते हैं। वेद में इन्द्र सम्बन्धी आलंकारिक वर्णनों को अपनी अज्ञता के कारण पुराणों में काल्पनिक और विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाश्चात्य विद्वानों तथा आगे आने वाले संस्कृत के कवियों ने भी इसी दूषित पद्धति का निर्वहन करते हुए न केवल अर्थ का अनर्थ किया बल्कि वेद में इतिहास आदि भी सिद्ध करने का कुत्सित प्रयास किया है। उपरोक्त वेद मन्त्र में इन्द्र सूर्य को कहा गया है जो सभी नक्षत्रों का राजा है, इसलिए इसे देवराज इन्द्र कहा गया है। सूर्य रूपी इन्द्र स्वर्गलोक अर्थात् द्युलोक में रहता है। इसकी किरणें ही वज्र है। यह सूर्य बादलों से ऊपर रहता है तथा ये बादल ही उसका ऐरावत नामक हाथी है। सूर्य की किरणें अपसरण अर्थात् गति करने के कारण अप्सराएँ कहलाती है, जो नृत्य करती हुई दिखाई देती हैं **'अप्सु सरन्ति ताः अप्सराः'** जल में प्रविष्ट होती है इसलिए किरणें अप्सराएँ हैं। लहरों के साथ किरणें भी नृत्य करती हैं यही इनका नाचना है। इस सूर्य अर्थात् इन्द्र का युद्ध बादलों अर्थात् वृत्र से होता है। इन्द्र अपने किरणों रूपी वज्र से वृत्रासुर को मारते हैं जिससे वर्षा होती है और बादल मर जाते हैं। सूर्य की किरणों का नाम रम्भा, उर्वशी आदि भी है। जब अन्तरिक्ष में सूर्य की किरणें फैलती है तब सातों ऋषियों का (सात तारों का) तप समाप्त हो जात है अर्थात् वे निस्तेज हो जाते हैं, यही अप्सराओं (किरणों) के द्वारा ऋषियों का तप भंग करना कहा गया है....

ऋग्वेद के मन्त्र (१-८४-१३) का भाष्य करते हुए स्कन्द स्वामी ने एक कथा गढ़ ली कि देवताओं ने एक बार ब्रह्मा से कालकंज नाम के असुर को मारने का उपाय पूछा तो ब्रह्मा ने उन्हें दध्यङ् ऋषि के पास उपाय जानने के लिए भेजा। देवता उनके पास गए तो ऋषि ने उनके भाव को जानकर अपने प्राण त्याग दिए। उसकी हड्डियों से इन्द्र ने उस असुर का वध किया... कलान्तर में यही कथा दधीचि ऋषि के नाम से प्रचलित हो गई कि दधीचि की हड्डियों के वज्र से इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया। यह कथा इसलिए गढ़ ली गई क्योंकि वेद मन्त्र में आए शब्दों के आलंकारिक वर्णन को सही-सही परिप्रेक्ष्य में नहीं समझा गया। मन्त्र में आए इन्द्र, दधीचि, अस्थभिः तथा वृत्र

को लेकर एक बहुत ही रोचक कथा कल्पित कर ली जबकि मन्त्र का सीधा सा अर्थ है-(अप्रतिष्कृतः) स्थिर(इन्द्रः) इन्द्र ने (दधीचः) अपनी तेजरूप की (अस्थभिः) अस्थिर किरणों से (वृत्राणि) बादलों को (नवतीर्नव) निन्यानवे बार (जघान) मारा। भावार्थ रूप में इसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि सूर्य अपनी धूरी पर स्थित है। सूर्य की किरणों की उष्मा से बादल बरसते हैं। यह प्रक्रिया वर्षा के महीनों में अर्थात् आषाढ़, श्रावण और भादों में चलती रहती है। बार-बार बादल उठते रहते हैं और बार-बार सूर्य उन्हें समाप्त करके वर्षा करता है। मन्त्र का आध्यात्मिक अर्थ इस प्रकार है-(इन्द्रः) जितेन्द्रिय पुरुष (अप्रतिष्कृतः) प्रतिकूल शब्द से रहित हुआ-हुआ, प्रतिद्वन्द्वी से रहित हुआ-हुआ (दधीचः) ध्यानी पुरुष की-(ध्यानं प्रत्यक्तः। निरु.१२-३३) (अस्थभिः) (असु क्षेपणे) विषयों को दूर फैकने की शक्तियों से (वृत्राणि) ज्ञान की आवरणभूत वासनाओं को (नवतीः नव) निन्यावे बार (जघान) नष्ट करता है और इस प्रकार शतवर्षों को वासना-शून्य बनाता है। मन्त्रार्थ का भाव स्पष्ट है कि ध्यान-परायण व्यक्ति ही दध्यङ् व दधीचि है। विषयों को दूर फेकने की वृत्तियाँ ही हड्डियाँ है। वासना ही वृत्र है। निन्यानवे बार नाश का अभिप्राय यही है कि हम सदा वासना के आक्रमण को अपने से दूर रखने के लिए सजग रहते हैं।

इसी प्रकार इन्द्र द्वारा गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या से व्यभिचार करना, गौतम जी का इन्द्र को तथा अहिल्या को शाप देना, श्रीराम जी चरण स्पर्श से अहिल्या का उद्धार होना आदि भी कथा कल्पित कर ली गई है जबकि वास्तविकता यह है कि-

गच्छतीति गोः अतिशयेन गच्छतीति गौतमः चन्द्रः

अर्थात् जो शीघ्र चलता है उस चन्द्र का नाम गौतम है।

अहर्दिनं लीयतेऽस्यां तस्माद्रात्रि अहिल्याः

अर्थात् दिन जिसमें लीन हो जाता है उस रात्रि का नाम अहिल्या है। 'जृष वयो हानौ' इस धातु से जार शब्द बना है, अर्थात् नष्ट करने वाला। इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह जो अश्लील एवं काल्पनिक कथा बना दी गई है, वह तो वास्तव में सूर्योदय और सूर्यास्त का बहुत ही मनोरम एवं हृदयग्राही आलंकारिक वर्णन है। जब इन्द्र (सूर्य) उदय होता है तब चन्द्रमा (गौतम) दूसरे छोर पर समुद्र की तरफ चला जाता है उसके जाने पर सूर्य रात्रि रूपी अहिल्या को नष्ट (जारकर्म) कर देता है। जब सूर्य स्वयं अस्ताचल की तरफ जाता है उस सयम अपनी किरणों (चरणों) के स्पर्श से जाते हुए भी अहिल्या (रात्रि) को पुनः जीवित कर देता है।

वास्तव में इन्द्र शब्द परमैश्वर्यार्थक 'इदि' धातु से उणादि 'रन्' प्रत्यय करके सिद्ध होता है। 'इन्द्र' के निरुक्त में प्रदर्शित कई निवर्चनों में से एक यह है- **इन्दन् शत्रूणां दारयिता** (निरुक्त १०-९) इसके अनुसार परमैश्वर्यार्थक 'इदि' धातु तथा विदारणार्थक 'दृ' धातु के योग से इन्द्र शब्द बना है जो परमैश्वर्यवान् होता हुआ शत्रुओं का विदारण करता है, वह 'इन्द्र' है। महर्षि दयानन्द जी ने इन्द्र के परमेश्वर, जीवात्मा, विद्वान् पुरुष, वीर राजा, प्राण, वायु, सेनानी, शूरवीर योद्धा, विद्युत्, यज्ञ, सूर्यलोक, किसान एवं वैद्य आदि अर्थ किए हैं।

अधिदैवत क्षेत्र में सूर्य इन्द्र है और वृत्र है- अन्धकार या बादल आदि। अधिभूत क्षेत्र में राजा या सेनापति इन्द्र और वृत्र हैं- देश पर आक्रमण करने वाले शत्रु आदि और आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मा इन्द्र है और वृत्र है- अज्ञानान्धकार एवं पापकर्म आदि। इस समस्त दृष्टिकोणों से इन्द्र द्वारा सोम-पान करने की संगती लगाई जानी अपेक्षित है तभी इन्द्र तथा उसके द्वारा किए गए सोमपान के रहस्य को हम भली प्रकार से समझ सकते हैं।

- महादेव, सुन्दरनगर-१७४४०१, हि.प्र.

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

ज्योतिष्टोम अग्निष्टोमाख्यस्य सोमयागस्य निरूपणम्

- सनत्कुमारः

महर्षि दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में यज्ञ की परिभाषा करते हुये कहा है ''अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त वा जो शिल्पव्यवहार और पदार्थ विज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिये किया जाता है। उसको यज्ञ कहते हैं।'' महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट यज्ञ की इसी परिभाषा को आधार बनाकर के शतपथ आदि ब्राह्मण, श्रौतसूत्र एवं अथर्ववेद में अग्निहोत्र से आरम्भ करके अश्वमेध पर्यन्त इन २३ यज्ञों के नाम और उनमें मुख्य प्रकृतियाग अग्निष्टोम नामक सोमयाग का विज्ञान (एवं यज्ञ का आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक स्वरूप, यज्ञ का अधिकारी, यज्ञ में प्रयुक्त द्रव्य, ऋत्विक्-संख्या, यज्ञ का फल, वेदों में यज्ञों की महिमा, यज्ञ के विभाग, यज्ञ एवं होम में अन्तर के साथ-साथ विधि) का प्रक्रिया सहित वर्णन किया गया है।

प्रक्रियातः पूर्वं सामान्येन परिचयो लिख्यते-

सोमयागसंज्ञाकारणम्- सोमेन इज्यतेऽस्मिन्निति सोमयागः, अत्र पुरोडाशादिनाऽनुष्ठाने सत्यपि सोमरसस्य प्राधान्यात् 'सोमयागः' इति व्यवहारः।

अग्निष्टोमसंज्ञाकरणम्- अग्निष्टोमाख्येन साम्ना समाप्यमानत्वाद् 'अग्निष्टोमः' इति प्रकृतियागो व्यवह्रियते। अत्र द्वादश स्तोत्राणि, अग्निष्टोमाख्यम् अन्तिमं स्तोत्रं तेन समाप्यमानत्वादयं यागोऽग्निष्टोमः संज्ञको भवति अन्यच्चाग्निस्तुतिसम्पादकेन 'यज्ञायज्ञिय' नामकेन स्तोत्रेण संस्था समाप्तिर्यस्य सोऽग्निष्टोमः।

व्युत्पत्तिस्तु- अग्निं स्तौति येन सोऽग्निष्टोमः, अथवाग्नेः स्तोमः स्तुतिर्यस्मिन् सोऽग्निष्टोमः।

कोऽयं स्तोमो नाम? उच्यते- प्रगीत्यधिकरणीभूत-ऋक्सङ्ख्यावाची स्तोमशब्दः। स चात्र लक्षणया तत्सम्बद्धयज्ञायज्ञियाख्यस्तोत्रविशेषकरणकस्तुतिपरो ज्ञेयः।

व्याख्यायते- स्तोत्रस्य योनिः ऋचो भवन्ति ऋचां गानं भिन्नेन क्रमेण भवति तेन पर्यायत्रयं पर्याये च एकस्य द्वयोः तिसृणाञ्च-ऋचामावृत्तिः क्रियते। एवमावृत्तितो निष्पादितं संख्यायुक्तं स्तोत्रं 'स्तोमः' इति कथ्यते। ते नवसंख्यका भवन्ति- त्रिवृत्स्तोमः, पञ्चदशस्तोमः, सप्तदशस्तोमः, एकविंशस्तोमः, त्रिणवस्तोमः, त्रयस्त्रिंशस्तोमः, चतुर्विंशस्तोमः, चतुश्चत्वारिंशस्तोमः, अष्टाचत्वारिंशस्तोमः।

स्तोत्रस्य परिभाषा- येन यागाहुतितः पूर्वं देवतायास्स्तुतिः सामगानेन तमेव स्तोत्रमाचक्षते।

शस्त्रस्य परिभाषा-तदनन्तरं तस्या एव देवतायास्स्तुतिः ऋग्भिः क्रियते तद् ऋक्समूहः शस्त्रमिति कथ्यते।

सोमयागस्य प्रकाशः - सोमयागः चतुष्प्रकारकः। एकाहः, अहीनः, साद्यस्क्रः, सत्रञ्चेति। क्रमेण परिभाष्यते।

१. एकाहस्तु- दीक्षोपसदामनेकदिनानुष्ठेयत्वेऽपि-एकस्मिन्नेव दिने सोमयागानुष्ठानं यत्र स एकाहः।

२. अहीनः - सोमयागस्य द्वित्रादिषु दिनेषु पुनः पुनरावृत्य अनुष्ठानं यत्र सोऽहीनः।

३. सत्रम् - त्रयोदशरात्रप्रभृतयः सहस्रसंवत्सरपर्यन्ताः सोमयागाः सत्राण्युच्यन्ते।

४. साद्यस्क्रः - एकस्मिन्नेव दिने सङ्कल्प-प्रभृत्यवभृथान्तमनुष्ठानं यस्य स साद्यस्क्र इत्युच्यते।

सत्राण्यपि द्विविधानि- रात्रिसत्राणि अयनसत्राणि चेति। तत्र द्वादशरात्रप्रभृतिः शतरात्रपर्यन्तानि रात्रिसत्राणि। ततः प्रभृत्ययनसत्राणि इति सामान्यस्वरूपम्।

तत्रैकाहसोमयागस्यापि सप्तसंस्था भवन्ति। यथा अग्निष्टोमः, उक्थ्यः, षोडशी, अतिरात्रः, अत्यग्निष्टोमः, वाजपेयोऽप्तोर्यामश्चेति।

'सोमयाग ऋत्विजः' सोमयागे चत्वारो गणाः। एकैकस्मिन् गणे चत्वार इत्याहत्य ते षोडश भवन्ति। यथा-

१	२	३	४
ब्रह्मगणः	अध्वर्युगणः	होतृगणः	उद्गातृगणः
१. ब्रह्मा	१. अध्वर्युः	१. होता	१. उद्गाता
२. ब्रह्मणाच्छंसी	२. प्रतिप्रस्थाता	२. मैत्रावरुणः	२. प्रस्तोता
३. आग्नीध्रः	३. नेष्टा	३. अच्छावाक्	३. प्रतिहर्त्ता
४. पोता	४. उन्नेता	४. ग्रावस्तुत्	४.सुब्रह्मण्यः

केचित् सदस्यनामकमृत्विजं सप्तदशं कथयन्ति।

'सोमयागेऽधिकारी' तत्र यो नाम कूश्माण्डैः पवित्रेष्ट्यादिभिः जपैः स्नानादिभिर्वा पावनैः कर्मभिरात्मानं शोधयति निर्वैरश्च भवति भूतेषु स एव सोमयागानुष्ठानेऽधिकारी भवति।

सोऽयं सोमयागेऽधिकारिविशेषणयुक्तेन सपत्नीकेनावश्यानुष्ठेयः। अकरणेऽस्य प्रत्यवायो भवति।

अग्निष्टोमस्य सोमयागस्य कालः- वसन्तेऽग्निष्टोमः (का.श्रौ. ७.१.५) अग्निष्टोमो वसन्ते कर्त्तव्यः।

सोमयागस्य फलम्- अफलवत्सु कर्मसु कस्यापि

प्रवृत्त्यदर्शनादिदानीं फलमुच्यते। 'सर्वकामोऽग्निष्टोमः' (सत्या.श्रौ.७.१.१) सर्वासां कामानां पूर्त्यर्थमग्निष्टोमेन यजेत। अथवा 'स्वर्गकामो यजेत' अर्थाद् यागेन स्वर्गं भावयेत्। यत्र दुःखानां निवृत्तिरस्ति स एव खलु स्वर्गः।

'वेदेषु सोममहिमा' ऋग्वेदसंहिताया नवमं मण्डलं समग्रमपि पवमानसोमस्यैव महिमानं वर्णयति। वैदिकेषु प्रसिद्धतमस्य ''इन्द्रं वर्धन्तो असुरः कृण्वन्तोविश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अराव्णः'' (ऋ. ९.६३.५) इत्यस्य मन्त्रस्यायमेव देवः। वेदेष्वयं राजा कथ्यते। प्रायेण राजपदविशेषितमेव सोमं कथयन्ति वैदिकानि वचांसि यथा- सोमो राजा प्रथमः (ऋ. १०.१०९.२) सोमेन सह राज्ञा (ऋ. १०.९७.२२) सोमं राजानमवसे (१०.१४१.३) इत्यादयः। अन्यच्च- पुरुष इमं पीत्वाऽमृतत्वं सेवते। मुमूर्षुरपि दैवात् प्राप्येमं मृत्योरात्मानं मोचयति। अप्रतिमं बलमभिवर्धते। पीत्वा चेमं कृतकृत्यमात्मानं मन्वते। एवमन्ये च बहवो गुणा उपवर्णिता वेदेषु सोमस्य। तैत्तिरीयसंहितायां तु एष सोम ओषधीनामधिपतिरस्ति इति वर्णितम्। (तै.सं. ३.४.५.१) अन्यच्च- सोमेन आदित्या बलिनः (ऋ. १०.८५-२) 'सोमेन पृथिवी मही' (अथर्व. १४-१-२) पार्थिवशक्तेराधारोऽपि सोम एव।

ब्राह्मणग्रन्थेषु सोममहिमा

राजा वै सोमः। (श. १४.१.३.२)
सोमो राजा चन्द्रमाः। (श. १०.४.२.१)
पितृदेवत्यो वै सोमः। (श. २.४.२.१२)
सोमो वै प्रजापतिः। (श. ५.१.५.२६)
योऽयं वायुः पवतऽएष सोमः। (श. ७.३.१.१)
सोमः सर्व देवताः। (ऐ. २.३)
प्राणो वै सोमः। (श. ७.३.१.४५)
सोम ओषधीनामधिराजः। (गो.उ. १-१७)
एष वै सोमो राजा देवानामन्नं यच्चन्द्रमाः। (श. १.६.४.५)

एवमन्ये बहवो गुणा उपवर्णिता ब्राह्मणग्रन्थेषु सोमस्य

यागस्य परिभाषा (यज्ञस्य परिभाषा) द्रव्यं देवता त्यागः (यज्ञः)

द्रव्यं= दधिसोमव्रीहियवादि। देवता= अग्नीन्द्रादिः। त्यागः= देवतोद्देशेन क्रियमाणः स्वत्वनिवृत्यनुकूलो व्यापारः। इदमेव यज्ञस्वरूपम्।

'' यागहोमयोर्भेदः''

यागः - ''तिष्ठद्धोमा वषट्कारप्रदाना याज्या-पुरोऽनुवाक्यावन्तो यजतयः''। (का.श्रौ. १.१.२.६) अर्थात् तिष्ठता येमो येषु ते, वषट्कारेण प्रदानं येषु ते, तथा याज्यावन्तः।

पुरोऽनुवाक्यावन्तश्च ये यागा इत्युच्यन्ते। यथा- 'स्वर्गकामो यजेत'

होमलक्षणम्- ''उपविष्ट होमाः स्वाहाकार प्रदाना जुहोतयः।'' (का. १.२.७)

अर्थादुपविष्टेन होमो येषु स्वाहाकारेण च प्रदानं येषु ते होमार (जुहोतय) इत्युच्यन्ते।

महर्षिदयानन्दकृत-यज्ञपरिभाषा- महर्षिदयानन्द-कृतधातुप्रत्ययानुसारेणार्थः- (यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु धातो नङ् प्रत्ययः) विद्याज्ञानधर्मानुष्ठानं वृद्धानां देवानां विदुषामेहिकपारमार्थिकसुख सम्पादनाय सत्करणम्। सम्यक्पदार्थगुणसम्मेलनविरोधज्ञानसंगत्या शिल्पविद्या-प्रत्यक्षीकरणम्। नित्यं विद्यासमागमानुष्ठानम्। विद्यासुखधर्मादिशुभगुणानां नित्यं दानकरणमिति।

अन्यच्च- अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त वा जो शिल्प व्यवहार और जो पदार्थ हैं, जो कि जगत् के उपकार के लिये किया जाता है, उसको यज्ञ कहते हैं। (आर्योद्देश्य. ४३)

यज्ञविभागाः- १. तत्रसप्तपाकसंस्थाः। २. सप्तहविर्यज्ञसंस्थाः। ३. सप्तसोमसंस्थाः।

१. पाकयज्ञाः - औपासनहोमः, वैश्वदेवम्, पार्वणम्, अष्टका, मासिश्राद्धम्, श्रवणा एवं शूलगव इत्येतानि कर्माणि वैवाहिकाग्नौ कर्त्तव्यानि।

२. हविर्यज्ञाः - अग्निहोत्रम्, दर्शपूर्णमासौ, आग्रयणम्, चातुर्मास्यानि, निरूढ़पशुबन्धः सौत्रामणिश्च वैतानिकाग्नौ भवन्ति।

३. सोमयागाः - अग्निष्टोमः, उक्थ्यः, षोडशी, अतिरात्रम्, अत्यग्निष्टोमः, वाजपेयोऽसोर्यामश्च वैतानिकाग्नौ भवन्ति।।

''श्रौतस्मार्तयज्ञयोर्भेदः''

१. अग्न्याधानसिद्धग्नित्रयेण (गार्हपत्याग्निः, आहवनीयाग्निः, दक्षिणाग्निः) साध्यानि कर्माणि श्रौतानि। कानि पुनस्तानिः-अग्निहोत्रतोऽश्वमेधपर्यन्तानि।

२. वैवाहिकाग्नि साध्यानि च कर्माणि स्मार्तानि। सप्तपाकसंस्थाः स्मार्तेषु खलु।

विशेषः- विनाग्निना न जीवनं खलु वैदिकानाम। ब्रह्मचर्यावस्थायां समिदाधानाग्निः, कृतदारस्यौपासनाग्निः, सभायामध्यापनकाले च सभ्याग्निः, मन्त्रे तु खलु पावकाग्निः। उक्तञ्च महर्षियास्केन ''मन्त्रः पवित्रमुच्यते''

(नि. ५.२) ''येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा'' (साम. ५.२.८.५)

''यज्ञस्य नित्यकाम्यनैमित्तिकरूपेण विभागः''

अग्निहोत्रस्य विषये वचनद्वयम्- यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुयात्। अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः। नित्ये तु पयसा जुहोति। तस्याकरणे प्रत्यवाय भवति। काम्ये तु यवाग्वा ग्रामकामः। तण्डुलैर्बलकामः। दध्नेन्द्रियकामः। धृतेन तेजस्कामः। (का.श्रौ.सू. १५.११-२५)

इष्टिविषयेऽपि- यावज्जीवं दर्शपौर्णमासाभ्यां यजेत। (आ.श्रौ. ३.१४.१०)

कारीर्या यजेत वृष्टिकामः। मित्रविन्दा श्री राष्ट्रमित्रायुठकामस्य। (का.श्रौ. ५.१२.१)

अन्यत्रापि- चातुर्मास्यैः स्वर्गकामो यजते (शा.भा.) अक्षय्यं ह वै सुकृतं चातुर्मास्ययाजिनो भवति। (श.ब्रा. २.५.४.१)

सोमयागेऽपि- सर्वकामोऽग्निष्टोमः। स्वर्गकामो यजेत।

वाजपेययागः - अन्नाद्यकामस्य। अन्नं वाजः। तेनान्नाद्यकामो यजेत। (शा.श्रौ. १५.१-२, ४.११)

वाजपेयेनेष्ट्वा सम्राड् भवति। (५.१.१.१४ श.ब्रा.)

वाजपेयेनेष्ट्वा बृहस्पतिसवः। तेजस्कामस्य ब्रह्मवर्चस्यकामस्य च। (शा.श्रौ. १५.४.१२)

रासूययागः - ''राजा रासूयेन स्वर्गकामो यजेत।'' (सत्या. श्रौ. १३.३.१.६)

यद्राजसूयेन यजते सर्वेषां राज्यानां श्रैष्ठ्यं स्वराज्यमाधिपत्यं पर्येति। (शा.श्रौ. १५.१२.१)

अश्वमेधयागः - राज्ञोऽश्वमेधः सर्वकामस्य। (का.श्रौ. २०.१.१)

प्रजापतिरश्वमेधमसृजत। (श.ब्रा. १३.१.४१)

अश्वमेधेन यजते सर्वान् कामानाप्नोति सर्वा व्युष्टीर्व्यश्नुते। (का.श्रौ. १६.१.१)

नैमित्तिकेष्टिस्तु - ''यस्य ग्रहान् दहत्यग्नये क्षामवते पुरोडाशमष्टाकपालं निर्वपेत्''

''यस्य रुद्रः पशून् शमयेत् स गावेधुकं चरुं निर्वयेत्'' (मैत्रा. २.४.२)

इत्यादिषु स्थलेषु निमित्ते प्राप्ते कर्त्तव्यतया आपतति खलु।

(वेदेषु निर्दिष्टा यज्ञाः तत्प्रतिपादका मन्त्राश्च)

- राजसूयं वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वरः। अर्काश्वमेधावुच्छिष्टे जीववर्हिर्मदिन्तमः।।

- अग्न्याधेयमथो दीक्षा कामप्रश्छन्दसा सह। उत्सन्ना यज्ञाः सत्राण्युच्छिष्टेऽधि समाहिताः।।

- अग्निहोत्रं च श्रद्धा च वषट्कारो व्रतं तपः। दक्षिणेष्टं पूर्तं चोच्छिष्टेऽधि समाहिताः।।

शेष भाग अगले अंक में....

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० जून २०१४ तक)

१. श्री भास्करसेन गुप्ता, बैंगलूर, कर्नाटक २. श्रीमती कमला देवी पंचोली, अजमेर ३. श्री विजयसिंह गहलोत, अजमेर ४. श्री दिनेशचन्द नवाल, अजमेर ५. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ६. आर्यसमाज चन्देना, सहारनपुर, उ.प्र. ७. सूर्यांशी, चन्देना, सहारनपुर, उ.प्र. ८. श्री अनुज, सहारनपुर, उ.प्र. ९. श्री रेवन्तराम, बीकानेर, राज. १०. श्रीमती निधि भारतीय, नई दिल्ली ११. श्रीमती रामेश्वरी चौहान, कुचेरा १२. श्रीमती कौशलपुरी आर्या, भटिण्डा, पंजाब १३. श्री मुकेश आर्य, रोहतक, हरि. १४. श्री महिपाल आर्य, रोहतक, हरि. १५. श्री सत्यपाल शास्त्री, नारनौल, हरि. १६. श्रीमती प्रकाशवती आर्या, सोनीपत, हरि. १७. श्री कंवरजीत भारद्वाज, हिसार, हरि. १८. श्री विनोद कुमार कोलवाली, सिरसा, हरि. १९. श्री यदुकुल भूषण शास्त्री, हिसार, हरि. २०. श्री जेठूसिंह यादव, बीकानेर, राज. २१. श्री ओमप्रकाश आर्य, मथुरा, उ.प्र. २२. श्री अर्णव शेखर, बैंगलूर, कर्नाटक २३. सुश्री अवनी शेखर, बैंगलूर २४. श्री श्रद्धानन्द, दिल्ली २५. श्री मुकेश राकेश रावत, सोनीपत, हरि. २६. श्री देवमुनि, अजमेर २७. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २८. श्री बंशीलाल, अजमेर।

–परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ–भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० जून २०१४ तक)

१. श्रीमती कमला देवी पंचोली, अजमेर २. श्री विजयसिंह गहलोत, अजमेर ३. श्री रेवन्तराम, बीकानेर, राज. ४. श्रीमती इन्द्रा मन्त्री, अजमेर ५. श्रीमती सावित्री मन्त्री, अजमेर ६. श्रीमती सरोज, अजमेर ७. श्री श्यामसुन्दर बांगड़, अजमेर ८. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर ९. जेनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली १०. श्रीमती रुखमणि आर्या, सोनीपत, हरि. ११. श्री राजसिंह कादियान, सोनीपत, हरि. १२. श्रीमती प्रकाशवती, सोनीपत, हरि. १३. श्री त्रिभुवन प्रकाश अग्रवाल, गाजियाबाद, उ.प्र. १४. राजपूताना म्युजिक हाउस, अजमेर १५. श्रीमती उर्मिला अवस्थी, जोधपुर, राज. १६. श्री हेमन्त शारदा, अजमेर १७. श्रीमती शरबती बाई, अजमेर १८. श्री स्नेहलता चोपड़ा, कल्याण १९. श्री समीर चोपड़ा, कल्याण २०. श्री मयंक कुमार, अजमेर २१. श्रीमती कमला देवी अरोड़ा, अजमेर २२. श्री जगराम आर्य नारनौल, महेन्द्रगढ़ २३. श्रीमती शकुन्तला देवी आर्या, बीकानेर, राज. २४. श्री शिवाजी सदाशिव, भण्डारा, महाराष्ट्र २५. श्री जयचन्द आर्य, मेरठ, उ.प्र. २६. श्री मुकेश राकेश रावत, सोनीपत, हरि. २७. श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, उज्जैन, म.प्र. २८. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २९. डॉ. चन्द्र ज्योत्स्ना, जोधपुर, राज. ३०. श्री सुभाष नवाल, अजमेर ३१. श्रीमती रमा नवाल, अजमेर ३२. श्री संजय शर्मा, अजमेर ३३. श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, अजमेर ३४. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज.।

–परोपकारिणी सभा, अजमेर।

वेदगोष्ठी का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष पर २७वीं वेदगोष्ठी का आयोजन ऋषि मेले के साथ ही दीपावली के पश्चात् ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४, शुक्र, शनि, रविवार को किया गया है। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विषय 'भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद' रखा गया है। इससे पूर्व वर्ष में कुछ विचार ग्यारहवें समुल्लास के सम्बन्ध में विचार किया गया था। इस वर्ष की गोष्ठी में ऋषि दयानन्द के पश्चात् प्रचलित मत सम्प्रदायों के सिद्धान्त और उद्देश्यों पर विशेष चर्चा होगी। किन विशेष सम्प्रदायों को विचार के लिए लिया जायेगा, इसकी सूचना आगे के अङ्क में दी जा सकेगी।

श्रेष्ठ निबन्ध के लिए प्रथम ६१००, द्वितीय ४१००, तृतीय पुरस्कार ३१०० रुपये रखे गये हैं। गत वर्ष के श्रेष्ठ निबन्धों को आगामी ऋषि मेले के अवसर पर पुरस्कृत किया जायेगा। **– संयोजक**

प्रतिक्रिया

माननीय सम्पादक प्रो. धर्मवीर जी, सादर नमस्ते।

मैं 'परोपकारी' पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद सम्मत धर्म के सही स्वरूप को स्थापित करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी जिसमें यह उद्देश्य भी निहित था कि आर्य कहलाने वाला प्रत्येक व्यक्ति श्रेष्ठ मानवीय गुणों को धारण करें। लेकिन वर्तमान में मैं जब अपने बहुत से आर्य बन्धुओं के व्यवहार को देखता हूँ तो मुझे लगता है कि हम आर्यत्व के गुणों में बहुत पीछे रह गए हैं। आर्य समामों में यज्ञ, भजन और प्रवचन द्वारा सत्संग तो नियमित तौर पर होते हैं, जो अच्छे भी हैं, लेकिन उन पर अधिकांश लोग उस स्तर का आत्मचिन्तन नहीं करते या नहीं कर पाते जिससे उनके जीवन में सार्थक परिवर्तन आए। इसका कारण मुझे यह लगता है कि हमने कदाचित ध्यान, साधना को अपने सत्संगों में अधिक महत्त्व नहीं दिया। क्योंकि मैंने अनुभव किया है कि दैनिक जीवन में ध्यान और साधना से व्यक्ति की प्रवृत्तियों में स्वयं बदलाव आने लगता है और वह आध्यात्मिकता द्वारा आत्मचिन्तन की ओर भी बढ़ने लगता है। जबकि मैंने आर्यसमाज से इतर ऐसी कुछ संस्थाएँ देखी हैं जो वेदानुकूल ध्यान-चिन्तन करवा रही हैं और अपने अनुयायी की संख्या में वृद्धि कर रही हैं। जब दूसरे ऐसा कर सकते हैं तो वेदों की रक्षा की पताका फहराने वाला आर्यसमाज इसमें पीछे क्यों रहें। अतएव मैं अपने सभी आर्य बन्धुओं विशेषकर पदाधिकारियों से यह निवेदन करता हूँ कि वह अपने साप्ताहिक सत्संग में ध्यान-साधना भी कराएँ और इसके अतिरिक्त परोपकारिणी सभा के ध्यान विशेषज्ञों द्वारा तीन महीने में कम से कम एक बार एक सप्ताह के ध्यान शिविर का आयोजन अवश्य कराएँ।

- विनोद कालरा, प्रशान्त विहार, रोहिणी, दिल्ली

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

जिज्ञासा समाधान – ६७

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा– कुछ विद्वान् वेदों का काल पाश्चात्य विद्वानों के आधार पर २००० या ३००० ईसा पूर्व ही मानते हैं, क्या यह ठीक है? और मैक्समूलर ऋग्वेद को दुनिया के पुस्तकालयों की सबसे पुरानी पुस्तक मानता है, क्या यह मैक्समूलर की मान्यता ठीक है? क्या हम आर्यों को भी इसी के अनुसार मानना चाहिए। कृपया मार्गदर्शन करें।

– अनिरुद्ध आर्य, दिल्ली

समाधान– वेदों का काल जब से मानवोत्पत्ति हुई है तभी से है। आज इस काल को महर्षि दयानन्द के अनुसार १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार ११५वाँ वर्ष चल रहा है। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार वेदों की, की गई काल गणना ठीक नहीं है। क्योंकि इनके द्वारा की गई काल गणना निराधार और पक्षपात पूर्ण कपोलकल्पना मात्र है। इस गणना के लिए इन विद्वानों के पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है। जब हमारा लाखों वर्ष पुराना इतिहास सप्रमाण हमें प्राप्त हो रहा है, तब हम इनकी कुछ हजार वर्ष पूर्व की बात कैसे स्वीकार कर लें। हाँ इनकी बात को वह स्वीकार कर सकता है जो अपने ऋषियों, महापुरुषों से प्रभावित न होकर, पाश्चात्य संस्कृति व विद्वानों से प्रभावित रहा हो।

कुछ लोगों की निराधार व अल्पज्ञान भरी बात है कि ऋग्वेद की रचना सबसे पहले हुई और इसके बाद अन्य वेदों की। ऐसी मान्यता वाले लोग अथर्ववेद को तो ऋग्वेद से बहुत बाद का मानते हैं। इस बात का भी उनके पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

हमारे ऋषियों के अनुसार चारों वेदों का काल एक ही है, एक ही साथ एक ही समय परमेश्वर ने ४ ऋषियों के हृदयों में चारों वेदों का अलग-अलग ज्ञान दिया अर्थात् अग्नि ऋषि को ऋग्वेद का, वायु ऋषि को यजुर्वेद का, आदित्य ऋषि को सामवेद का और अङ्गिरा ऋषि को अथर्ववेद का ज्ञान दिया। ऋषियों ने ऐसा कहीं नहीं लिखा कि चारों वेदों की उत्पत्ति अलग-अलग समय में हुई। हमें वेद व ऋषियों के अनेक प्रमाण प्राप्त हैं कि जिनसे ज्ञात होता है कि चारों वेद एक ही समय में उत्पन्न होते हैं। जैसे-

यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपाः। -अथर्व. ४.३५.६

ब्रह्म प्रजापतिर्विधाता लोका वेदाः सप्त ऋषयोऽग्नयः। -अथर्व. १९.९.१२

इन दोनों मन्त्रों में वेद शब्द का बहुवचनान्त वेदाः शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह वेदाः शब्द चारों वेदों का संकेतक है।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।।
-ऋ. १०.९०.९, यजु. ३१.७

यस्मिन्नृचः साम यजुंᳩषि यस्मिन्
प्रतिष्ठिता रथानाभाविवाराः। -यजु. ३४.५

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्।।
-अथर्व. १०.७.२०

स्तोमश्च ऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च।
-यजु. १८.२९

ऋचो नामास्मि यजुंᳩषि
नामास्मि सामानि नामास्मि। -यजु. १०.६७

स उत्तमां दिशमनुव्यचलत्।।
तमृचश्च सामानि च यजूंषि
च ब्रह्म चानुव्यचलन्।।
-अथर्व. १५.६.७-८

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्
यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः।।
श.ब्र. १४.५.४.१० व बृहद्.उप. ३४.१०

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः।
– मु. ५.१.१.५

इत्यादि अनेक वेद व ऋषियों के प्रमाण सिद्ध करते हैं कि चारों वेदों का काल एक ही है।

आप मैक्समूलर की मान्यता के विषय में भी जानना चाहते हैं कि उनकी मान्यता ठीक है या नहीं। मैक्समूलर ने तथाकथित भाषाशास्त्र के आधार पर वेदों के रचना काल की सम्भावना सर्वप्रथम १८५९ ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'ए हिन्दी ऑफ एंशियट संस्कृत लिटरेचर' में की थी। उनकी यह कालावधि किसी तथ्य पर आश्रित न होकर विशुद्ध कल्पना पर अवलम्बित थी किन्तु यह मान्यता इतनी बार दुहरायी गयी कि परवर्ती समय में आधुनिक इतिहासकारों में बिना सोचे-समझे स्थापित सी माने जाने

लगी। लेकिन स्वयं मैक्समूलर ने १८८९ में 'जिफोर्ड व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत अपने इस मत पर सन्देह प्रकट किया था और ह्विटनी जैसे पाश्चात्य व प्रो. कुञ्जन राजा प्रभृति भारतीय इतिहासकारों ने भी मैक्समूलर के भाषाशास्त्र के आधार पर वेदों के काल सम्बन्धी मत का जोरदार खण्डन किया था। दूसरा जो मैक्समूलर ऋग्वेद को दुनिया की सबसे पुरानी पुस्तक कहता है। उसकी यह बात वेदों की रचना के सम्बन्ध में भ्रम पैदा करने के उद्देश्य से कही गई प्रतीत होती है। ऋषियों-महर्षियों के आधार पर आर्यसमाज की दृढ़ मान्यता के विपरीत ये वेदों का क्रमिक विकास सिद्ध करते हैं, जिससे वेद ईश्वरीय रचना न होकर मानवीय रचना सिद्ध हो सके।

इस सारे प्रसंग को मैक्समूलर की इन मान्यताओं के सन्दर्भ में भी देखा जाना चाहिए कि वह वेदों को बाइबिल से नीचली श्रेणी का मानता है। कैथोलिक कॉमनवैल्थ के दिये गये एक साक्षात्कार में यह पूछे जाने पर कि विश्व में कौन-सा धर्मग्रन्थ सर्वोत्तम है, तो मैक्समूलर ने कहा-

"There is no doubt, however, that ethical teachings are far more prominent in the old and New Testament than in any other sacred book." He also said "It may sound prejudiced, but talking all in all, I say the New Testament. After that, I should place the Quran which in its moral teachings is hardly more than a later edition of the New Testament. Then would follow.... according to my opinion, the Old Testament, The southern Buddhist Tripitika..... The Veda and the Avesta." (LLMM, Vol. II, PP. 322-323)

अर्थात् ''इसमें कोई सन्देह नहीं कि यद्यपि किसी भी अन्य 'पवित्र पुस्तक' की अपेक्षा (ईसाईयों के धर्म ग्रन्थ) ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट में नैतिक शिक्षायें प्रमुखता से विद्यमान् हैं। उसने यह भी कहा यह भले ही पक्षपातपूर्ण लगे लेकिन सभी दृष्टियों से मैं कहता हूँ कि न्यू टेस्टामेंट (सर्वोत्तम है)। इसके बाद मैं कुरान को कहूँगा जो कि अपनी नैतिक शिक्षाओं में न्यू टेस्टामेंट के नवीन संस्करण के लगभग समीप है। उसके बाद..... मेरे विचार से ओल्ड टेस्टामेंट (यहूदियों का धर्मग्रन्थ), दी सदर्न बुद्धिस्ट त्रिपिटिका, (बोद्धों का धर्मग्रन्थ) फिर वेद और अवेस्ता (पारसियों का ग्रन्थ) है।''

अतः आर्यों को वेद के सन्दर्भ में मैक्समूलर जैसे लोगों के मत को उद्धृत करने से बचना चाहिए। इसके स्थान पर ऋषियों-महर्षियों के मत को रखना चाहिए। लेकिन अगर कोई आर्य वेदों की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए मैक्समूलर को इस रूप में उद्धृत करता है कि 'मैक्समूलर भी वेदों की प्राचीनता के प्रसंग में एक सत्य को अस्वीकार न कर सका, उसे भी ऋग्वेद को प्राचीनतम पुस्तक स्वीकार करना पड़ा' इस रूप में बात रखी जा सकती है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

संस्था - समाचार

१६ से ३० जून २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान, आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रातः काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। दोनों समय प्रवचन-स्वाध्याय आदि की व्यवस्था है। इन प्रवचनों, स्वाध्याय के क्रम में वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों पर क्रमशः विचार किया जाता है। वेदमन्त्रों के अन्तर्गत ऋग्वेद के अग्नि, इन्द्र, मरुत्, वरुण, रुद्र, उषा, विष्णु, सोम, अश्विनौ, सविता, बृहस्पति आदि देवता विषयक सूक्तों पर, विश्वामित्र-नदी संवाद (३/३३), यम-यमी संवाद (१०/१०), पुरुरवा-उर्वशी संवाद (१०-९५), सरमा-पाणि संवाद (१०/१०८), 'अस्य वामस्य' सूक्त (१/१६४), मृत्यु सूक्त (१०/२८), अक्ष सूक्त (१०/३४), ज्ञान सूक्त (१०/७१), पुरुष सूक्त (१०/९०), हिरण्यगर्भ सूक्त (१०/१२१), वाक् सूक्त (१०/१२५), नासदीय सूक्त (१०/१२९), श्रद्धा सूक्त (१०/१५०), स्त्री सूक्त (१०/१५९), अघमर्षण सूक्त (१०/१९०) संगठन सूक्त (१०/१९१) इत्यादि सूक्तों पर, यजुर्वेद के ३१वें (पुरुषाध्याय), ३२वें अध्याय, ३४वें अध्याय (ईशावस्यम्), आदि का, अथर्ववेद के मेधा सूक्त (१/१), राष्ट्रसभा सूक्त (३/४), शालानिर्माण सूक्त (३/१२), सांमनस्य सूक्त (३/३०) वर्षा सूक्त (४/१५), ब्रह्मचर्य सूक्त (११/५), उच्छिष्टब्रह्म सूक्त (११/७), भूमि सूक्त (१२/१) इत्यादि प्रसिद्ध सूक्तों/मन्त्रों पर क्रमशः विचार किया जाता है, इसके साथ योगदर्शन, सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों का स्वाध्याय भी किया जाता है।

१५ से २२ जून २०१३ तक अपने प्रातः कालीन प्रवचन के क्रम में डॉ. धर्मवीर जी ने यजुर्वेद के ३२वें अध्याय के मन्त्रों की चर्चा की। प्रथम मन्त्र-

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः।।

की चर्चा करते हुए आपने बताया कि यहाँ परमेश्वर के नामों की चर्चा है। वेदों में अनेकत्र कुछ ऐसे मन्त्र भी हैं, जहाँ केवल परमात्मा के नामों का उल्लेख है। चूँकि परमात्मा के अंख्य गुण है और गुणों के कारण नाम होते हैं अतः परमात्मा के असंख्य नाम हैं। तृतीय मन्त्र की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि प्रतिमा=तोलने/मापने का साधन=माप=बाँट को कहते हैं। परमात्मा के अनन्त स्वरूप को किसी सीमा में नहीं बान्धा जा सकता अतः वेद कहता है- **'न तस्य प्रतिमाऽअस्ति'**

अपने योगदर्शन की व्याख्या के क्रम में स्वामी विष्वङ् जी ने वृत्ति निरोध के उपायों में अभ्यास व वैराग्य के प्रसंग में वैराग्य की सरल व्याख्या प्रस्तुत की। आपने बताया कि विवेक की अवस्था में साधक, समस्त पदार्थों के यथार्थ स्वरूप को प्रमाणों के माध्यम से जानकर उसे दूसरी वस्तुओं से पृथक् कर देता है। यहाँ साधक, वस्तुओं का सुखदायी-दुःखदायी, नित्य-अनित्य, शुद्ध-अशुद्ध के रूप में विवेचन/विभाजन करता है और जब वह दुःखदायी, अनित्य व अशुद्ध वस्तुओं को त्यागकर सुखदायी नित्य-शुद्ध वस्तुओं को ग्रहण करता है तो यही वैराग्य कहलाता है। इस प्रकार विवेक वैराग्य का कारण है।

जैसा कि उपरोक्त प्रसंग में सुस्पष्ट है कि वैराग्य में दुःखदायी, अनित्य व अशुद्ध वस्तुओं को छोड़ा जाता है और सुखदायी, नित्य व शुद्ध का ग्रहण किया जाता है। लेकिन दुर्भाग्य से आज समाज में वैराग्य का अभिप्राय त्याग में ही समझा जाता है। जो व्यक्ति घर, परिवार, समाज, धन, सम्पत्ति का जितने बड़े स्तर पर त्याग करता है उसे उतना बड़ा साधक स्वीकार किया जाता है। भले ही उसने ग्रहण करने योग्य आत्मा-परमात्मा विषयक ज्ञान और अन्य शुभगुण ग्रहण न किए हो। यहाँ यह भी स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि पदार्थों को त्यागना केवल वैराग्य के कारण होता है ऐसा नहीं है। व्यक्ति, अविद्यामूलक राग, द्वेष, भय आदि के कारण भी पदार्थों को त्याग सकता है या व्यक्ति मन से तो पदार्थों को चाहता है लेकिन समाज आदि के भय से पदार्थों का बाह्य त्याग करता है, यह सोचते हुए कि अगर मैं अमुक पदार्थ का भोग करूँगा तो समाज क्या कहेगा आदि-आदि। वस्तुतः वैराग्य में किसी पदार्थ का त्याग मन से किया जाता है।

श्मशान वैराग्य की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि जैसे श्मशान में दृश्य-विशेष के उपस्थित होने पर व्यक्ति में भी जीवन की नश्वरता, भोगों की नश्वरता सम्बन्धी भाव आते हैं। लेकिन श्मशान से बाहर आते ही व्यक्ति पुनः अपनी पुरानी दिनचर्या में, उन्हीं कार्यों/भोगों को करने

कराने में लग जाता है जिसकी नश्वरता, असारता उसने देखी थी। ठीक ऐसे ही जब कोई व्यक्ति किसी पदार्थ के दोष देखकर उसे त्यागता है लेकिन पुनः कालान्तर में उसी त्यक्त वस्तु का पुनः भोग प्रारम्भ कर देता है तो ऐसे कर्म को महर्षि व्यास 'कुत्ते के द्वारा उल्टी कर उसे पुनः खाने के समान' समझते हैं।

महर्षि पतञ्जलि के मत में दृष्ट भोग (ऐसे भोग जिसका व्यक्ति अनुभव कर चुका है) व आनुश्रविक भोग (जिसका व्यक्ति ने अनुभव नहीं किया) के विषयों में चित्त का आसक्त न होना ही वैराग्य है-

दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम् अर्थात् वैरागी में अनुभूत व आनुश्रविक विषयों के प्रति किसी प्रकार की तृष्णा नहीं होती क्योंकि दिव्य, अदिव्य भोग के सामने आने पर वैरागी उसको अतृप्तिकारक, परिणाम दुःख, ताप दुःख आदि से युक्त देखता है।

रविवारीय प्रवचन के क्रम में आचार्य कर्मवीर जी ने धर्म और अधर्म की सरल व्याख्या प्रस्तुत की। आपने बताया कि जब व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को छोड़कर गौण या निषिद्ध कर्म करता है तो वह पाप ही करता है। पुनः निषिद्ध कर्म कौन-कौन से हैं? तो आपने बताया कि इसका उल्लेख हमारे शास्त्रों में अनेकत्र है यथा-

'अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व'। पुनः **शुक्रेभिरङ्गैरज आततन्वान् क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः। शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियो मिमीते बृहतीरनूनाः।।**

ऋ. ३/१/५

का उद्धरण देते हुए शारीरिक आरोग्यता के महत्त्व का प्रतिपादन किया। शारीरिक आरोग्यता के महत्त्व के कारण ही महर्षि ने आर्यसमाज के नियम में इसे स्थान दिया। उपरोक्त मन्त्र के भाष्य में भी महर्षि लिखते हैं कि- 'हे मनुष्यो! जब तक तुम्हारें दृढ़ अङ्ग वाले शरीर, पवित्र बुद्धियाँ, धर्मात्मा आप्त विद्वानों का सङ्ग, जितेन्द्रियता से पूर्ण आयु नहीं होती तब तक अतुल लक्ष्मी और विद्या भी नहीं होती।' पुनः कौन व्यक्ति स्वस्थ है? इस प्रश्न का समाधान आयुर्वेद के उद्धरण के माध्यम से करते हुए आपने बताया कि जिसके शरीर में दोष (वात-पित्त-कफ), धातु (रस, रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि, मेद, वीर्य), मल का निष्कासन और क्रियाएँ सममात्रा में (अपेक्षानुरूप मात्रा में) होते रहते हैं वह व्यक्ति स्वस्थ है। पुनः स्वास्थ्य के तीन स्तम्भों आहार, निद्रा व ब्रह्मचर्य की भी आपने इसी सन्दर्भ में व्याख्या प्रस्तुत की।

सायंकालीन प्रवचनों के क्रम में मेरठ से पधारे माननीय श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य ने यज्ञोपवीत के महत्त्व, यज्ञ की आवश्यकता और वेदों के स्वाध्याय के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किये। वेद ज्ञान की अपौरुषेयता का निरूपण करते हुए आपने मनुष्य जीवन में वेद की शिक्षाओं पर भी प्रकाश डाला। वेद में कुछ भी विज्ञान के, तर्क के और सृष्टिक्रम के विपरीत नहीं है, मानव जाति को ज्ञान और भाषा वेद के माध्यम से ही प्राप्त हुआ है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त भोग्य पदार्थों के उपयोग हेतु जो ज्ञान अपेक्षित था, वह बीज रूप में वेदों के माध्यम से प्राप्त हुआ। यज्ञ करने एवं वेद का स्वाध्याय करने का अधिकार हमें उपवीत के माध्यम से मिलता है। देव ऋण, पितृ ऋण और ऋषि-ऋण से अनृण होने का यही उपाय है। वरुण सूक्त के मन्त्र-

सप्तमर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदमभ्यंहुरो गात्। आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ।।

ऋग्वेद (१०.५.६)

का अर्थ करते हुए उन सात मयार्दाओं का संक्षेप में निरूपण किया जिनके पालन न करने से व्यक्ति पापी हो जाता है। वे हैं- (१) ब्रह्म हत्या न करना (२) गर्भपात न करना (३) चोरी न करना (४) व्यभिचार न करना (५) मद्यपान न करना (६) बुरे काम बार-बार न करना (७) पापकर्म करके झूंठ न बोलना। यास्कमुनि ने वेद के इस मन्त्र के सन्दर्भ में यही मर्यादाएँ मानी हैं। सायण ने भी अपने भाष्य में इन्हें स्वीकार किया है। मनु महाराज ने जो दश दोष (अधर्म के लक्षण) बताये हैं, वे स्थूल रूप से इनमें आ जाते हैं। उद्देश्य तो मानव जीवन को पाप से, दुर्गुणों से बचाना ही है। प्रवचनों में ऐसे नीति वचनों पर चर्चा होती रही जो लगते तो साधारण हैं परन्तु उनका प्रभाव व्यापक और गहरा होता है जैसे-

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुः विद्या यशो बलम्।।

२. योग-साधना-शिविर- आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति उपलब्ध नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। अतः महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अपने मुख्य परिसर ऋषि उद्यान में वर्षों से योग्य

आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग साधना शिविरों का आयोजन करती आ रही है। इन शिविरों में साधना के विषयों का वैदिक दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जाता है, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान कराके, आत्मनिरीक्षण द्वारा आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया जाता है।

विगत वर्ष से इन शिविरों में नवीन पाठ्यक्रम अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ स्तर के शिविरों का आयोजन किया जाएगा, जिनमें क्रमशः उत्तरोतर सूक्ष्मता के साथ विषयों का प्रतिपादन किया जायेगा। इस योजना के अन्तर्गत प्राथमिक स्तर के दो शिविर जून २०१३ व अक्टूबर २०१३ में सफलता पूर्वक आयोजित किए जा चुके हैं।

द्वितीय स्तर का प्रथम शिविर १५ से २२ जून २०१४ के मध्य आयोजित किया गया, जिसमें राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, जम्मू व कश्मीर, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार, झारखण्ड, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि से पधारे लगभग ८३ साधक-साधिकाओं (प्रथम स्तर उत्तीर्ण) ने भाग लिया। शिविर में शिविरार्थियों को डॉ. धर्मवीर जी, स्वामी विष्वङ् जी, आचार्य सत्येन्द्र जी, आचार्य सोमदेव जी आदि से योगदर्शन, सांख्यदर्शन, मन की एकाग्रता, आन्तरिक साधना, आत्मनिरीक्षण, जिज्ञासा समाधान आदि पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। प्रातः सायं दोनों समय एक-एक घण्टा ध्यान-उपासना का क्रियात्मक अभ्यास स्वामी विष्वङ् जी द्वारा करवाया गया। श्री यतीन्द्र आर्य के द्वारा विभिन्न आसनों, श्वसन क्रियाओं आदि का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

३. वृष्टि यज्ञ- भीषण गर्मी से प्राणी मात्र को राहत मिले एवं अपनी अमृतमयी बौछारों से वर्षा देवी अन्न-वनस्पतियों के साथ-साथ प्राणी मात्र में नवीन प्राणों का संचार करें, इस कामना के साथ ऋषि उद्यान में परोपकारिणी सभा व जीवसेवा समिति, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी वृष्टि यज्ञ का प्रारम्भ २९ जून से किया गया। प्रतिदिन आधा घण्टे चलने वाले इस यज्ञ में नगर से पधारे यज्ञप्रेमी जन श्रद्धा के साथ वर्षा सूक्त (अथर्व. ४/१५) के मन्त्रों से आहुति प्रदान करते हैं।

४. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) १६ से २२ जून २०१४- ऋषि उद्यान में योग-साधना-शिविर में शिविरार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

(ख) २३ से २९ जून २०१४- आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद, म.प्र. में उपनिषद्-कथा के माध्यम से लोगों का मार्गदर्शन किया।

५. आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- वैदिक संस्थान, ओढ़व, अहमदाबाद, गुज. द्वारा अहमदाबाद के प्रसिद्ध 'कुशाभाऊ ठाकरे ऑडिटोरीयम्' में समायोजित व्याख्यान माला 'मानव जीवन का लक्ष्य क्या है?' में अनेक दृष्टान्तों के माध्यम से व्याख्यान प्रदान किया। जिसकी सभी उपस्थित श्रोताजन ने भरपूर सराहना की। यहाँ समादरणीय आचार्य सत्यजित् जी का भी व्याख्यान हुआ जिसका समाज के उच्चशिक्षित वर्ग के लगभग ४५०-५०० लोगों ने इन प्रवचनों का लाभ उठाया।

आगामी कार्यक्रम- **(क) १३ से १५ जुलाई २०१४**- जालन्धर व अमृतसर में पारिवारिक सत्संग प्रदान करेंगे।

(ख) १०-११ अगस्त २०१४- वृन्दावन में व्याख्यान।

(ग) १३ से १७ अगस्त २०१४- आर्यसमाज, नागौर गेट, हिसार के कार्यक्रम में भाग लेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

आर्यजगत् के समाचार

१. निरुक्त एवं न्यायदर्शन अध्ययन का अवसर- वेद-वेदाङ्गों-उपाङ्गों में रुचि रखने वाले सज्जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि स्वामी रामदेव जी द्वारा संचालित पतञ्जलि योग पीठ, हरिद्वार में सितम्बर २०१४ के प्रथम सप्ताह से 'निरुक्त' एवं 'न्याय-दर्शन' का अध्यापन आरम्भ हो रहा है, जो कि लगभग ६ माह में फरवरी २०१५ के अन्तिम सप्ताह तक समाप्त होगा। 'निरुक्त' को आचार्य प्रद्युम्न जी पढ़ायेंगे व 'न्यायदर्शन' को आचार्य सत्यजित् जी पढ़ायेंगे।

किसी भी आयु के वयस्क (पुरुष/महिला) इसमें अध्ययन कर सकते हैं। अध्येता स्वावलम्बी-अपने कार्य करने में समर्थ, स्वस्थ व अनुशासित हो। निवास व्यवस्था ४-५ के समूह में रहेगी व भोजन सामूहिक रहेगा। निवास, भोजन, अध्यापन नि:शुल्क है। शेष व्यक्तिगत खर्च अध्येताओं को स्वयं वहन करना है। इच्छुक व्यक्ति अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- ब्र. सन्दीप- ०८९५४८९०१७०

२. शिविर व सम्मान समारोह सम्पन्न- गुरु ब्रह्मानन्द ट्रस्ट बनी पुण्डरी के तत्त्वावधान में स्वामी बलेश्वरानन्द जी संरक्षण व राजपाल सिंह जी के निर्देशन में बनी पुण्डरी में १ से ८ जून तक आर्य मानव निर्माण शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में लगभग १२५ आर्य वीरों ने भाग लिया। शिविर में शारीरिक दृढ़ता के साथ-साथ बौद्धिक दृढ़ता के गुर भी सिखाये गए। भारतीय संस्कृति से हमारी पिढ़ी अधिक जुड़े इसके लिए विशेष प्रयास किया गया। शिविर के समापन दिवस पर बच्चों का विशेष प्रदर्शन रहा।

ट्रस्ट प्रतिवर्ष 'गुरु ब्रह्मानन्द सम्मान' से एक किसी आर्य विद्वान् को सम्मानित करता है। इस वर्ष आर्य जगत् के महान् इतिहासज्ञ, ऋषि के दिवाने, आर्यसमाज के सजग प्रहरी, २५० से अधिक पुस्तकों के प्रणेता व सम्पादक प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु को सम्मान के लिए चुना। ट्रस्ट ने इन योग्य विद्वान् का चयन करके अपने गौरव को बढ़ाया है। सम्मान समारोह की अध्यक्षता श्री चन्द्रदेव जी (झज्जर) ने की। मुख्य अतिथि डॉ. कृष्णकुमार (सचिव कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) रहे। सम्मान श्रद्धेय स्वामी बलेश्वरानन्द जी के हाथों ५१ हजार की राशि भेंट कर व शॉल ओढ़ाकर किया गया। माननीय जिज्ञासु जी ने इस सम्मान के लिए ट्रस्ट का हृदय से धन्यवाद व कृतज्ञता प्रकट की। जिज्ञासु जी ने अपने उदार हृदय का परिचय देते हुए, सम्मान में मिली समस्त राशी परोपकारिणी सभा को विशेष कार्य के लिए भेंट करने की घोषणा की। जिससे आर्यों का उत्साह बढ़ा व राजेन्द्र जिज्ञासु जी के प्रति विशेष श्रद्धा पैदा हुई।

३. यज्ञोपवीत संस्कार- सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं आर्यसमाज जयपुर दक्षिण द्वारा आयोजित सात दिवसीय आर्य युवा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर में पाँचवें दिन सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार कराया। २४ युवकों को यज्ञोपवीत धारण कराने से पहले शिक्षा काल तक ब्रह्मचर्य का व्रत दिलाया गया। शिविर में अन्त्याक्षरी, गायन, भाषण, निबन्ध लेखन व वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुई।

४. स्थापना दिवस मनाया- गुजरात के भरुच आर्यसमाज के १२२ वें स्थापना दिवस पर श्री स्वामी शान्तानन्द सरस्वती द्वारा १५ जून को प्रवचन हुए। प्रवचन का विषय वैदिक तत्त्वज्ञान का सरल परिचय था। स्वामी जी ने ईश्वर, जीव और प्रकृति आदि मूल सत्ताओं पर प्रकाश डाला। ईश्वर का महत्त्व बताते हुए ऋग्वेद के मन्त्र- **द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया** की चर्चा की। पंच महायज्ञ व स्वाध्याय सत्संग का पालन एवं दुर्गुणों का परित्याग अवश्य करे। दूसरे सत्र में ईश्वर प्राप्ति का मार्ग- योगाभ्यास महर्षि पतंजलि द्वारा अष्टांग योग की व्याख्या की। योग तथा उपासना, यम, नियमों का पालन पर बल दिया। गायत्री मन्त्र का जप, ईश्वर को समर्पित कर पूर्ण भाव के साथ करें। आपने शम, दम, तितिक्षा आदि षड् सम्पत्ति का स्वरूप समझाया। उपस्थित जन प्रभावित हुए।

५. वैदिक धर्म प्रचार- वन-पर्वतों से घिरे छत्तीसगढ़ प्रान्त के कोरबा जनपद में जमनीपाली स्थित एन.टी.पी.सी. लिमिटेड के उद्यम 'कोरबा सुपर थर्मल पावर स्टेशन' की हरी-भरी स्वच्छता से युक्त खूबसूरत कॉलोनी में श्री एस.के. सिंह, उपमहाप्रबन्धक-प्रचालन एवं अनुरक्षण तथा श्री जी.एन. कुल्हाड़े, उपमहाप्रबन्धक- प्रचालन एवं अनुरक्षण के सत्प्रयास से ब्र. राजेन्द्रार्य, आर्यसमाज शक्तिनगर जनपद- सोनभद्र, उ.प्र. को जून २०१४ में वैदिक धर्म प्रचार हेतु आमन्त्रित किया गया। ब्रह्मचारी जी ने दि. ८ जून २०१४ को श्री एस.के. सिंह के आवास कोरबा में यज्ञ सम्पन्न

कराया तथा 'पञ्चमहायज्ञों का गृहस्थाश्रम में महत्त्व' विषय पर प्रेरणादायक प्रवचन रखा। दि. ९/६/२०१४ को श्री जी.एन् कुल्हाड़े के आवास में सायंकाल यज्ञ/सत्संग का कार्यक्रम ब्रह्मचारी जी ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर श्री ओम कुमार आर्य, भजनोपदेशक, कोरबा के भजन हुए।

६. वैदिक आध्यात्मिक सत्संग- ईश्वर की भक्ति त्रिविध दु:खों से मुक्ति दिलाती है। आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक तीन प्रकार से मिलने वाले दु:खों को दूर करने का एकमात्र उपाय ईश्वर की शरण में जाना है। उक्त विचार आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने आर्यसमाज विज्ञाननगर, कोटा, राज. में आयोजित वैदिक आध्यात्मिक सत्संग में व्यक्त किये। इस अवसर पर अरविन्द पाण्डेय, जे.एस. दुबे एवं मन्त्री राकेश चड्ढा ने सभी अतिथियों को सम्बोधित किया।

७. दीक्षान्त समारोह सम्पन्न- आर्यजनों को यह जानकर हर्ष होगा कि वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन, रोजड़ में गतवर्ष २८/८/२०१३ कृष्ण जन्माष्टमी से आरम्भ किये गये न्यायदर्शन अध्यापन सत्र का समापन १५ जून २०१४ को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। बीस सुयोग्य ब्रह्मचारियों व कुछ अन्य व्यक्तियों को आचार्य सत्यजित् जी द्वारा न्यायदर्शन का अध्यापन वात्स्यायन भाष्य सहित कराया गया।

८. शिविर सम्पन्न- सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के आह्वान पर आर्यसमाज जयपुर (दक्षिण) राज. के तत्त्वावधान में स्थानीय जी.एल. सैनी कॉलेज ऑफ नर्सिंग के प्रांगण में १६ से २२ जून तक आर्य युवा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्त्व विकास शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ वैदिक आश्रम पिपराली, सीकर के अधिष्ठाता एवं सांसद सीकर स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने किया। २५ युवा शिविरार्थियों को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास हेतु आसन, जूडो-कराटे, मार्शल आर्ट, सैनिक शिक्षा व लाठी प्रचालन का प्रशिक्षण, निपुण प्रशिक्षक-गण सर्व श्री रामकृष्ण शास्त्री, रामबाबू आर्य व हिमांशु के निर्देशन में हुआ।

९. यज्ञ महोत्सव सम्पन्न - आर्यसमाज गुधनी के ११२वें वार्षिकोत्सव के सुअवसर पर 'यज्ञ-महोत्सव २०१४' का भव्य आयोजन किया गया। इस जनपद स्तरीय सम्मेलन में जहाँ २१ कुण्डीय यज्ञ किया गया। वहीं आर्यवीर-वीरांगना प्रशिक्षण शिविर भी लगाया गया। गृहस्थ सम्मेलन, वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के साथ अन्त में 'आर्य कवि सम्मेलन' भी आयोजित किया गया। शोभा यात्रा ११ जून को निकाली गई।

१०. समावर्तन संस्कार- गुरुकुलीय काल में आचार्य के सान्निध्य में होने वाले संस्कारों में उपनयन व वेदारम्भ संस्कार अनेक बार देखने व सुनने में आता है। किन्तु समावर्तन संस्कार जो आचार्य के सान्निध्य में होने वाला अन्तिम संस्कार है जो कि गुरुकुलीय शिक्षा के पूर्ण होने के बाद जब ब्रह्मचारी गृहस्थ जीवन में आना चाहता तब यह संस्कार होता है। सैकड़ों ब्रह्मचारी गुरुकुल से पढ़कर गृहस्थ जीवन में आ रहे हैं लेकिन किसी का समावर्तन संस्कार देखने, सुनने में नहीं आता। आधुनिक शिक्षा से प्रभावित हो कर दीक्षान्त समारोह तो मनाते हैं, किन्तु ऋषि प्रणीत समावर्तन संस्कार नहीं करते। ८० वर्ष पूर्व पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी का यह संस्कार हुआ था। यह उनकी जीवनी पढ़ने से पता चला। तब से आज तक अपवाद रूप में एक दो का ही सुनने में आया।

प्रसन्नता की बात है कि टूटी हुई परम्परा की पुन: शुरुआत आचार्य रणवीर एवं आचार्य आत्मवीर से हुई है। वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में दि. १५ जनू २०१४ को प्रात: काल सम्पन्न हुआ। आदरणीय डॉ. कमलेश कुमार शास्त्री ने इस संस्कार को विधिपूर्वक सम्पन्न कराया। इस संस्कार में छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा आदि अनेक प्रान्तों से लगभग २५० लोग पधारे थे।

११. आर्य दैनन्दिनी-२०१५ (डायरी)- आर्य प्रकाशन, ८१४, कूण्डे वालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-६ हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नम्बर प्रकाशित करता है। अत: आपसे निवेदन है कि आर्य विद्वान् अपने नाम के साथ दूरभाष व अपना पता भेजें। यह आप ३० अगस्त २०१४ तक भेजने की कृपा करें। ताकि उसे भली प्रकार आर्य दैनन्दिनी में प्रकाशित किया जा सके।

चुनाव समाचार

१२. आर्य समाज विज्ञाननगर, कोटा, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री जे.एस. दुबे, **मन्त्री**- श्री राकेश चड्ढा, **कोषाध्यक्ष**- श्री कौशल रस्तोगी को चुना गया।

१३. आर्य समाज खेड़ा अफ़गान, सहारनपुर के चुनाव में **प्रधान**- श्री आदित्य प्रकाश गुप्त, **मन्त्री**- श्री अमित कुमार आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री यशपाल गुप्त को

चुना गया।

१४. आर्य समाज छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री बाबूलाल पाटीदार, **मन्त्री**- श्री महेश शर्मा 'सुमन', **कोषाध्यक्ष**- श्री करणमल साहू को चुना गया।

शोक समाचार

१५. आर्यसमाज मकड़ौली कलाँ रोहतक के संस्थापक व वैदिक मिशनरी स्व. श्री बलवन्तसिंह आर्य का शान्ति एवं प्रेरणा दिवस सभा कार्यालय बलिदान भवन दयानन्दमठ रोहतक में डॉ. धर्मपाल देशवाल के ब्रह्मत्व में १३ जून २०१४ को प्रातः ९ बजे यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ जिसमें हरियाणा के कोने-कोने से पधारे सैकड़ों व्यक्तियों ने दिवंगत आत्मा श्री बलवन्तसिंह आर्य के सम्मान में आहुतियाँ देकर अपना हार्दिक शोक प्रकट किया। उनकी चिता को उनके सुपुत्रों आचार्य विजयपाल, श्री सत्यव्रत आर्य शास्त्री, श्री बिजेन्द्र आर्य तथा सुपौत्र श्री सत्येन्द्र व आलोक द्वारा मन्त्रोच्चारण के साथ मुखाग्नि दी है।

१६. वेद विदुषी आचार्या कु. पुष्पावती संस्थापिका/अध्यक्ष मातृ मन्दिर वाराणसी, उ.प्र. का गत २ मई २०१४ को निधन हो गया। दि. ३ मई को स्थानीय हरिश्चन्द्र घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त दि. ११ मई को संस्था के प्रधान कार्यालय में शान्ति यज्ञ व श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन कर आर्यजनों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

१७. वरिष्ठ पत्रकार-साहित्यकार शिवकुमार गोयल का पिलरवुवा स्थित निवास स्थान पर २९ अप्रैल को निधन हो गया। आप अस्थमा व हृदय रोग से पीड़ित थे। शवयात्रा में हजारों गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। उनका अन्तिम संस्कार ब्रजघाट-गंगातट पर किया गया। ज्येष्ठ पुत्र नरेन्द्र गोयल ने उनकी चिता को मुखाग्नि दी।

साहित्यकारों, पत्रकारों, कवियों तथा धार्मिक विभूतियों ने उनके देहावसान को अपूर्णनीय क्षति बताया है। आपने प्रेरणा देने वाले तथा राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हजारों लेख लिखे। विगत सोलह वर्षों से आपका 'अमर उजाला' में नियमित धर्मक्षेत्र तथा अन्तर्यात्रा नाम से एक प्रेरक प्रसंग छपता था, जिसे लाखों पाठक अत्यन्त अभिरुचि से पढ़ते थे।

वेद गोष्ठी का परिणाम

गत २६ वर्षों से ऋषि मेले के अवसर पर परोपकारिणी सभा व अन्तरराष्ट्रीय वेद पीठ के तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेद गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। जिसमें विद्वान् लोग अपने-अपने शोध पत्रों का वाचन करते हैं। इन शोध पत्रों का संग्रह भी सभा प्रकाशित करती है।

गत वर्ष की गोष्ठी में पढ़े गये निबन्धों में से तीन श्रेष्ठ निबन्धों को पुरस्कृत करने का निश्चय किया गया। गत ८,९,१० नवम्बर २०१३ के ऋषि मेले के अवसर पर सम्पन्न वेद गोष्ठी में विद्वानों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। विद्वान् परीक्षकों ने इनका अध्ययन कर जिन तीन निबन्धों को श्रेष्ठ मानकर पुरस्कार के लिए संस्तुति की है, उनके नाम इस प्रकार है-

स्थान	शीर्षक	लेखक
प्रथम	चार्वाक दर्शन और वेद	डॉ. वेद प्रकाश, होशियारपुर
द्वितीय	ईश्वर-जैन और वैदिक दृष्टि	डॉ. वेदपाल, मेरठ
तृतीय	ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध नहीं है	डॉ. कृष्णपाल, जयपुर

पुरस्कृत विद्वानों को बधाई और सभी विद्वान् लेखकों को धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

अध्यापक गण

ऋषि उद्यान अजमेर

योग-साधना शिविर (द्वितीय स्तर) १५ से २२ मई २०१४

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : १५ जुलाई, २०१४ ३९५९/५९

वर्ष १९३३ में मनाए गए श्रीमद्दयानन्द अर्द्ध निर्वाण शताब्दी समारोह के समय विभिन्न गतिविधियों का मानचित्र

Design@ MITTAL 9829797513

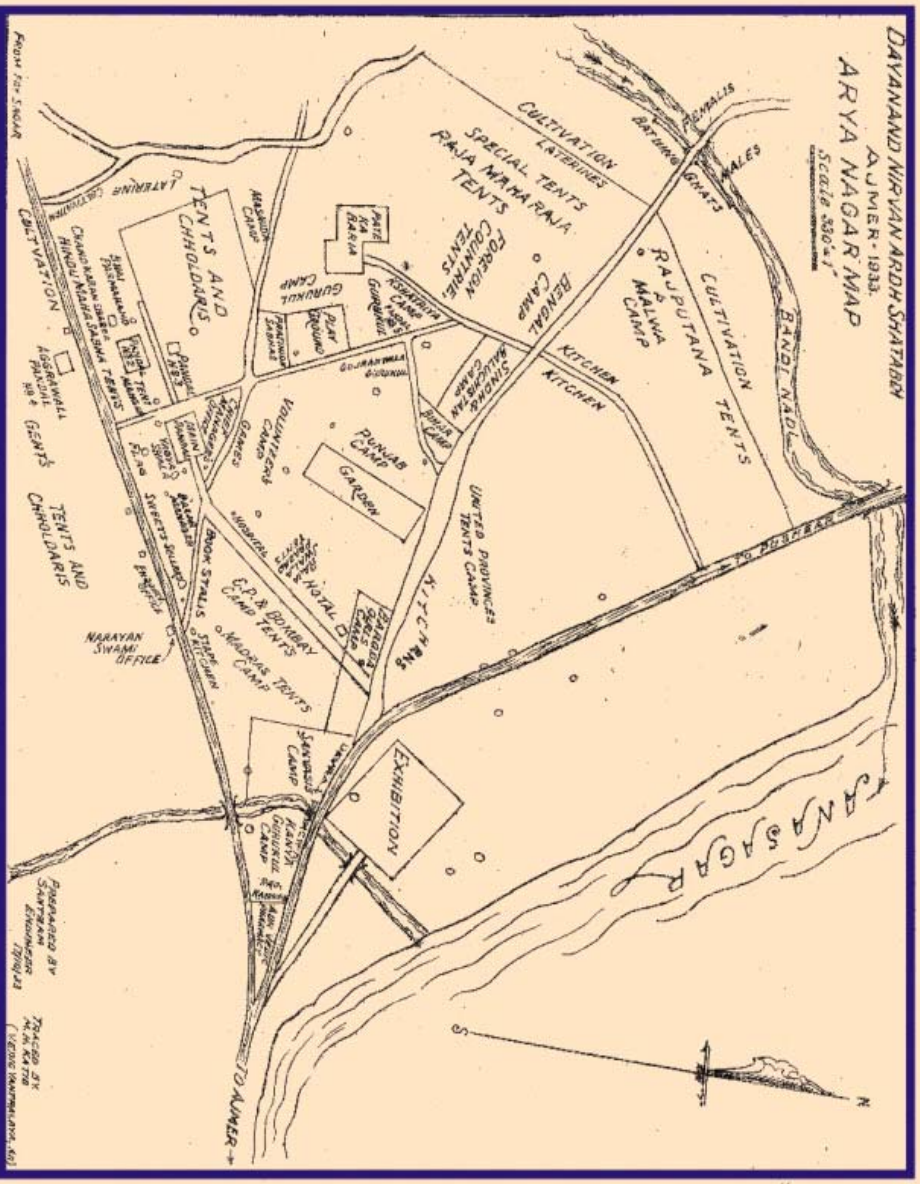

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकट